वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक - 6, सितम्बर 2020

# स्पन्दन

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE BHOPAL

स्थपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रविशारदः

## योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

( शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)

## :–संस्थान गान–:

''नागपृष्ठ समारूढं शूलहस्तं महाबलम्।
पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नम्याम्ह्यम्।।''

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
अपना देश बनेगा सारी दुनिया का सरताज।।
श्रद्धा अपरम्पार कि पत्थर में भी प्रीति जगाई।
ताजमहल पर गर्व हमें है, जग भी करे बड़ाई।।
उसी प्रेरणा से रच दें, हम फिर से नया समाज।
स्वागत करने को नवयुग का, नया सजाएं साज़।।
मलिन हो गई धरा आज फिर, उसको पुनः सजाएं।
हरित शिल्प से चलो सृजन का, नारा हम दोहराएं।।
सोये आदर्शों को आओ, सब मिल पुनः जगाएं।
नूतन सृजन हो शिव सृजन, दुनिया में पहुँचाएं।।

उठो सुनो प्राची से उगते, सूरज की आवाज।
एस.पी.ए. के छात्र करेंगे, नवयुग का आगाज़।।

## :–संस्थान गीत–:

ढूंढ रहा था, इक नया उजाला,
फिर मिला तू, इस नयी राह में।
तू ही जिन्दगी, तू ही मंजिल,
तू ही हर खुशी, इस दास्तान में।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे... एसपीए, भोपाल।
तेरी दुआ से, कुछ बन जाऊंगा,
तेरे नाम को, मिटने ना दूंगा।
जहां जहां पर, मेरे कदम पड़ेंगे,
वहाँ तेरा फिर, निशां दिखेगा।

ये जमीं, ये आसमां,
और सितारे भी हैं अपने साथ।
ये अंधेरा भी टल जायेगा,
कल सवेरा नया लायेगा।

हर खुशियों में, हर मुश्किल में,
हर लबों पे बस एक ही पुकार,
जी उठे .... एसपीए, भोपाल

### अनुक्रमणिका


| विवरण | पृष्ठ |
|---|---|
| निदेशक संदेश | 01 |
| संपादकीय | 02 |
| शैक्षणिक गतिविधियाँ | 03 |
| प्रशासनिक गतिविधियाँ | 08 |
| सांस्कृतिक गतिविधियाँ | 12 |
| खेल गतिविधियाँ | 13 |
| छात्र गतिविधि एवं उपलब्धियाँ | 14 |
| अभिव्यक्तियाँ | 20 |

# निदेशक की कलम से...

शिक्षा व्यक्तित्व विकास का मूल आधार है तथा शिक्षक उच्च नैतिक मूल्यों के संरक्षक हैं। किसी व्यक्ति के लिए सीखने की जिज्ञासा भी बेहद अहम है। व्यक्ति जीवन पर्यन्त अपृकृतिक और प्रकृति के अनेक घटकों से कुछ न कुछ सीखता हैं। शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने तथा जीवन में सफलता पाने के लिए आत्मविश्वास का होना जरूरी है। आत्मविश्वास वह कुंजी है जो सफलता की राह में आने वाली समस्याओं, भ्रांतियों और परेशानियों का सामना करने हेतु व्यक्ति को मजबूत बनाती है। व्यक्ति धेर्य, त्याग, परिश्रम, साहस और आत्मविश्वास से व्यक्तित्व विकास की उज्जवल संभावनाओं को जन्म देता है तथा समाज, सभ्यता और राष्ट्र में अपनी पहचान बना पाता हैं।

संस्थान की हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के छठवे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत सुखद अनुभूति हो रही है। पत्रिका के पूर्व अंकों पर पाठकों की उत्साहजनक प्रतिक्रिया के लिये सभी को धन्यवाद।

संविधान के अनुच्छेद 351 में निर्धारित किया गया है ''अष्टम् अनुसूची में वर्णित अन्य भारतीय भाषाओं के रूप शैली और पद बंधों को आत्मसात करते हुए हिंदी भाषा का विकास करना संघ सरकार का दायित्व है।''

मैं उम्मीद करता हूं संस्थान हिंदी पत्रिका ''स्पन्दन'' के माध्यम से हिंदी भाषा के विकास में सार्थक भूमिका निभाता रहेगा। पत्रिका के छठवे अंक के प्रकाशन पर सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित।

**प्रो. एन. श्रीधरन**

# बदलता परिदृश्य

तकनीक एवं व्यावहारिकता की वजह से परिवर्तन नये युग की देन है। जो कहीं न कहीं सामाजिक परिदृश्य को बदलने की चेष्टा करती रही है। परन्तु कोविड–19 के प्रादुर्भाव ने समाज को नयी व्यवस्था की ओर मुड़ने पर विवश किया, जो तकनीक एवं व्यावहारिकता पर भारी पड़ा है। समाज इस समस्या से कब उभरेगा और इसके क्या अंतिम परिणाम होंगे ये तो समय ही बताएगा। परन्तु इसने लोगों में सहिष्णुता, पर्यावरण एवं सामाजिक व्यवस्था मे आवश्यक तथ्यों एव संप्रतीक परिस्थति में मानव समाज की भागीदारी को महत्व प्रदान किया है।

समाज ने लोगों की मदद के लिए अपने हाथ आगे किये हैं, साथ ही विषाणु जनित रोगों के बारे में भी समाज में जागरूकता आयी है। लॉकडाउन के समय समाज के हर वर्ग ने अलग–अलग तरह की समस्याओं को महसूस किया, फिर भी समाज ने कुछ एक मामलों को छोड़ कर सहिष्णुता एवं संयमका उदाहरण प्रस्तुत किया है। घर से कार्यालय तक हर परिवर्तन को समाज अंगीकार करने में प्रयासरत् है।

सामाजिक, अकादमिक, समारोह एवं त्यौहार आदि के रूप परिवर्तन को भी समाज धीरे–धीरे अपना रहा, साथ ही सरकार के दिशा निर्देशों की अनुपालना में भी लगाहुआ है।भौतिक रूप से समाज में दूरियां जरुर आयी, परन्तु आतंरिक एवं मानसिक रूप से समाज संगठित हो रहा है। जिसमे तकनीक ने लोगो को जोड़े रखने में आवश्यक भूमिका निभाई, जोतकनीक कभी लोगों को अपनों से दूर करने के रूप में परिभाषित की जाती थी वही आज दूरी के कारण लोगों को जोड़े रखने में मददगार साबित हो रही है। अतः समय–समय पर वस्तुओं एवं लोक व्यवहार में परिवर्तन परिलक्षित होता रहा, जिसे समाज स्वाभविक रूप से स्वीकार करता रहा है।

सृजनात्मक क्षमता व्यक्ति विकास के प्रत्येक पहलु में भागीदार होती है। अतः इस क्षेत्र में चिकित्सक, अभियांत्रिकी, अभिकल्पना, योजनाकारों, समाजसेवियों, प्रशासनिकों, राजनीतिज्ञोंआदि का विशेष योगदान रहा है जो इस परिस्थति में भी समाज को विघटित होने से बचाए हुए है।

अतः वर्तमान संस्करण में इन्ही सभी परिवर्तनो को अपने में समायोजित करते हुए पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

**संपादक मंडल**

# षष्ठ दीक्षांत समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल वास्तुकला और योजना के क्षेत्र में मध्य भारत का प्रमुख एवं राष्ट्रीय महत्व का संस्थान है। संस्थान का षष्ठ दीक्षांत समारोह, 12 अक्टूबर 2019 को आई.आई.एस.ई.आर., भोपाल के सभागार में सफलतापूर्वक आयोजित हुआ। दीक्षांत समारोह का आरंभ संस्थान गान से हुआ। एस.पी.ए. शासी मण्डल के अध्यक्ष प्रो. बिमल पटेल ने कार्यक्रम के शुभारंभ की घोषणा की। संस्थान के प्रभारी निदेशक प्रो. संजीव सिंह ने स्वागत ज्ञापन व प्रतिवेदन दिया। प्रो. संजीव सिंह ने पूर्व शैक्षणिक वर्षों में संस्थान के संकाय एवं छात्रों द्वारा हासिल की गई उल्लेखनीय उपलिब्धयों पर प्रकाश डाला एवं आगामी वर्षों में आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया। प्रो. सिंह ने एस.पी.ए. भोपाल में वर्तमान में संचालित एवं प्रस्तावित योजनाओं के बारे में बताया। दीक्षांत समारोह में एक शोध वाचस्पति उपाधि सहित योजना एवं वास्तुकला विषयों की 176 स्नातक एवं परास्नातक डिग्री प्रदान की गई। दीक्षांत समारोह में 07 छात्रों को गोल्ड मेडल एवं 09 छात्रों को बेस्ट थीसिस सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया। सुश्री धारणा डेंग, (बैचलर ऑफ प्लानिंग) एवं सुश्री जूही शाह (मास्टर ऑफ इनवायरमेंट प्लानिंग) को सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु एस.पी.ए. भोपाल मेडल ऑफ एक्सीलेंस से सम्मानित किया गया। सुश्री विनिता वर्मा पैकरा को डॉक्टोरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. अजय कुमारसिंह, डायरेक्टर जनरल, लाइफ साइंस, डी. आर.डी.ओ. ने दीक्षांत समारोह को संबोधित किया। अपने अभिभाषण में डॉ. अजय कुमार सिंह ने डिग्री प्राप्तकर्ताओं को बधाई दी एवं आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि भारत में योग्यता और अवसर प्रचुर मात्रा में है। देश के युवा अपने–अपने क्षेत्रों में नये विचार एवं प्रयोगों से वैश्विक अर्थव्यवस्था मे महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उन्होंने बताया कि टेक्नोलॉजी हमारे लाइफ की ड्राइवर है और विभिन्न क्षेत्रों में अपना प्रभाव डालती है। आर्किटेक्चर, प्लानिंग और डिज़ाइन के ज्ञान का उपयोग वैश्विक जनहित में कार्य करने की असीम संभावनाएं प्रदान करता है। आज के समय में

जहां पर किसी भी क्षेत्र में तकनीकी जानकारी बहुत जल्दी पुरानी हो जाती है ऐसी जगह पर अपने आप को स्थापित रखने के लिए अपडेट होने की बहुत आवश्यकता है। प्रो. शिवा उमापति, निदेशक, आई.आई.एस.ई.आर., भोपाल समारोह के विशेष अतिथि थे उन्होंने सभी उपाधिकर्ताओं को बधाई देते हुए संबोधन में कहा कि भारत की युवा शक्ति के अथक प्रयास व सहभागिता से वैश्विक स्तर पर आर्थिक एवं सामाजिक क्षेत्रों में समानता लाई जा सकती है। डॉ. बिमल पटेल, अध्यक्ष, एस.पी.ए. भोपाल ने उपाधिकर्ताओं से कहा कि अप्रेंटिशिप एक सफल कैरियर के लिए आवश्यक है और आग्रह किया कि सभी को जीवन पर्यन्त अपने कौशल और ज्ञान को प्रखर बनाने के लिए सीखना आवश्यक है साथ ही सामाजिक विकास भी कार्यक्षेत्र का एक प्रमुख एजेण्डा होना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. शिउलि मित्रा, संकायाध्यक्ष (शैक्षणिक) एस.पी.ए. भोपाल द्वारा किया गया। ग्राम बरखेड़ा सालम एवं भौरी शासकीय स्कूल के छात्र भी दीक्षांत समारोह में आमंत्रित थे। छात्रों ने अभिभावकों व मित्रों के साथ बड़े हर्षोल्लास से फोटोसेशन कराया। सभी अभिभावक अपने बच्चों की सफलता पर अभिभूत हुए।

## स्थापना दिवस

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल, ने दिनांक 11 अक्टूबर 2019 को अपना 11 वां स्थापना दिवस आई.आई.एस.ई.आर., भोपाल के सभागार में बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया। इस अवसर पर आई.डी.सी., स्कूल ऑफ डिजाइन, आई.आई.टी., बॉम्बे से प्रसिद्ध डिजाइन चिंतक एवं ऐगजंक्ट प्रोफेसर उदय अठवंकर को विशेष व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया गया था। प्रो. अठवंकर के रिसर्च के विषय काग्निटिव सांइस एवं डिजाइन के बीच संबंधों पर केंद्रित है। प्रो. अठवंकर ने' "क्योंकि वास्तुकार अलग तरह से सोचते हैं......." विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने उद्बोधन में कहा कि एक आर्किटेक्ट को आर्किटेक्चर व आर्ट फार्म को साथ में लेकर विजुअल थिंकिंग करनी चाहिए। उन्होंनेकहाकि मुंबई जैसे शहरों में जमीन की कीमतों और आवास की गुणवत्ता जैसे मुद्दोंपर नये प्रकार से सोचने की आवश्यकता है।

उन्होंने दक्षिणी पूर्व एशियाई देशों में घनी आबादी वाले आवासों के संदर्भ में द्विआयामी के स्थान पर त्रिआयामी आवासों के उपयोग के बारे में बताया। उन्होंने प्रायोगिक तौर पर 3 डी आवासों के संदर्भ में जन साधारण की आवश्यकताओं को समाहित करते हुए बनाये माडलों को दर्शाया जो कि 2 डी आवासों के संदर्भ में अधिक प्रभावी हैं। व्याख्यान के द्वितीय चरण में प्रो. उदय अठवंकर ने "गेम" डिजाइन के बारे में बताया एवं आर्किटेक्ट से आग्रह किया कि वो क्रिएटिव इंडस्ट्री में एक नई सोच के साथ योगदान दें। इसी के साथ उन्होने एक वीडियो भी साझा किया कि कैसे स्लम एरिया में खेल के जरिए वहां पर रहने वाले लोगों की समस्यायें समझी व जानकारियां प्राप्त की जा सकती है। उक्त अवसर पर वास्तुकला की सर्वश्रेष्ठ छात्रा सुश्री प्रियंकाकर को गिरिराज किशोरी मेमोरियल मेडल से सम्मानित किया गया। एस.पी.ए. भोपाल के छात्र–छात्राओं ने नृत्य एवं गायन के अभिनय से सभा के सभी आगंतुकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

## राष्ट्रीय शिक्षा दिवस

११ नवम्बर २०१९ को राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री, मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती पर संस्थान में बड़े ही श्रद्धा और सम्मान के साथ मनाया गया।

## एन.आई.आर.एफ. रैंकिंग में एस.पी.ए. भोपाल 7 वे स्थान पर

मा.सं.वि.मं., भारत सरकार द्वारा आयोजित वर्ष 2020 की एन.आई.आर.एफ. रैंकिंग में वास्तुकला के क्षेत्र में कार्यरत शीर्ष 20 संस्थानों में योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल 7 वे स्थान पर है। रैंकिंग में भारत के संस्थानों को शिक्षण, संसाधनों, अनुसंधान एवं पेशेवर अभ्यास, स्नातक परिणाम, आउटरीच और समावेशी धारणा पर आंका गया है।

# यूनिवर्सल एक्सेसिबिलिटी पर कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 09 दिसम्बर2019 से 12 दिसम्बर 2019 के मध्य संस्थान परिसर में जी.आई.एस. एवं यूनिवर्सल एक्सेसिबिलिटी पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। उक्त आयोजन में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा प्रायोजित कार्यशाला में जी.आई.एस. के ज्ञान के आधार पर पूरे भारत से 20 प्रतिभागियों को चुना गया था जिनमें से अधिकतर विजयवाड़ा, जयपुर, रूड़की, ग्वालियर एवं भोपाल से थे। कार्यशाला का उद्देश्य जी.आई.एस. का परिचय यूनिवर्सल एक्सेसिबिलिटी के क्षेत्र में कराना था। कार्यक्रम का प्रारंभ टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस, मुंबई से मधुरा नगरचौधरी ने किया। उन्होंने विकलांगों के विभिन्न मॉडलों तथा लोगों और परिवारों की अक्षम स्थितियों से जुड़े विषयों पर चर्चा की। कार्यशाला का केन्द्र विशेषतः भारतीय शहरों में यूनिवर्सल एक्सेसिबिलिटी का वर्गीकरण कर जोन बनाना था। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने कार्यात्मक सीमाओं का अनुकरण किया और अपने अनुभवों पर कुछ अभ्यास और चर्चा की। प्रो. रचना खरे, प्राध्यापक, एस.पी.ए. भोपाल ने अपने संबोधन में पर्यावरण में पहुंच की आवश्यकता एक्सेस ऑडिट करने के तरीके और शहर के स्तर और भवन स्तरों पर पहुंच के मानकों पर चर्चा की। इस कार्य के लिए भोपाल शहर को उदाहरण के तौर पर लिया गया था। कार्यक्रम के समापन में सभी प्रतिभागियों ने यूनिवर्सल एक्सेसबिलिटी जोन मैप प्रस्तुत किया। कार्यशाला का संयोजन एस.पी.ए. भोपाल के जी.आई.एस. विशेषज्ञ डॉ. काकोली साहा, सहायक प्राध्यापक द्वारा किया गया।

"उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये"-स्वामी विवेकानंद

# पेरीअर्बनाइजेशन पर तृतीय एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल में दिनांक 17–20 दिसम्बर 2019 के मध्य पेरी अर्बनाईजेशन पर तीसरा एशियाई क्षेत्रीय सम्मेलन एस.पी.ए., भोपाल, तोंगजी विश्वविद्यालय, संघाई, चीन एवं पुसान क्षेत्रीय विश्वविद्यालय, बुसान, दक्षिण कोरिया के सहयोग से आयोजित किया गया। सम्मेलन मेंजी.आई.जेड. जर्मनी, एम्प्रेस ऑफ आई.सी.एस.एस.आर., मानव संसाधन विकास मंत्रालय, दिल्ली, ए.आई.जी.जी.पी.ए., म.प्र. पर्यटन विकास निगम एवं बोर्ड, शहरी विकास एवं आवास विभाग का सहयोग था। कार्यक्रम का प्रारंभ 17 दिसम्बर 2020 से भोपाल शहर के मिंटो हॉल में किया गया। उद्घाटन सत्र में एस.पी.ए. भोपाल के निदेशक प्रो. डॉ. एन. श्रीधरन ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। इस अवसर पर पूर्व मुख्य सचिव श्री आर. परशुराम (आई.ए.एस.) ने समारोह में सम्मिलित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है कि हम जन सामान्य 'जो काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं, के लिए योजना बनाए और नियोजन करें। शहरी विकास और आवास विभाग के प्रमुख सचिव श्री संजय दुबे (आई.ए.एस.) ने मध्यप्रदेश के शहरों के विकास के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आवास एवं शहरी मामलों के सचिव श्री दुर्गा शंकर मिश्रा (आई.ए.एस.) ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज के अर्ध शहरी क्षेत्र कल के नगरीय/शहरी क्षेत्र है। अर्ध शहरी क्षेत्र के विकास के लिए योजना बनाने की आवश्यकता है। सम्मेलन में दक्षिण कोरिया, ताइवान एवं अन्य चीन क्षेत्र, जापान, जर्मनी, थाईलैंड, अमेरिका, मलेशिया, सिंगापुर, कनाडा, यूके समेत दुनिया भर के 75 प्रतिभागी शामिल हुए थे।

"आप अपना भविष्य नहीं बदल सकते लेकिन अपनी आदतें तो बदल सकते हैं। और बदली हुई आदतें ही आपका भविष्य बदल देंगी"

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

# हिन्दी पखवाड़ा

संस्थान परिसर में 15 दिवसीय हिन्दी पखवाड़ा 16 से 30 सितम्बर 2019 के मध्य बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। संस्थान के राजभाषा विभाग के इस आयोजन में हिन्दी भाषा के ज्ञान के संवर्धन व व्यापक प्रचार–प्रसार हेतु छात्रों व छात्राओं, शिक्षकों, अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताऐं जैसे "निबंध लेखन, सुलेख लेखन, हिन्दी टंकण, अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद, प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली, कार्यालय टिप्पण/हिन्दी प्रारूपण, हिंदाक्षरी, हिंदी कविता एवं गीत प्रतियोगिता" इत्यादि आयोजित की गई। उक्त प्रतियोगिताओं में संस्थान के कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि पद्मश्री श्रीमति मेहरूनिस्सा परवेज़, प्रख्यात लेखक को आमंत्रित किया गया था, इस अवसर पर संस्थान की हिन्दी पत्रिका "स्पन्दन" के अंक 5 का विमोचन भी किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

**विजयी प्रतिभागी – कर्मचारी श्रेणी**

| नाम | प्रतियोगिता | पुरस्कार |
|---|---|---|
| अनुग्रह नागाइच | अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद | प्रथम |
| स्वपनिल लौवंशी | अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद | द्वितीय |
| सरोज वर्मा | अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद | तृतीय |
| श्वेता सक्सेना | भजन/गजल प्रतियोगिता | द्वितीय |
| अनुग्रह नागाइच | वाद–विवाद प्रतियोगिता | प्रथम |
| शिउलि मित्रा | वाद–विवाद प्रतियोगिता | तृतीय |

| | | |
|---|---|---|
| अनुग्रह नागाइच | हिंदी टंकण | प्रथम |
| सौरभ तिवारी | हिंदी टंकण | द्वितीय |
| अनुश्री दर्शना | हिंदी टंकण | तृतीय |
| अनुग्रह नागाइच | कार्यालय टिप्पण/हिंदी प्रारूपण | प्रथम |
| योगेन्द्र जोशी | कार्यालय टिप्पण/हिंदी प्रारूपण | द्वितीय |
| घनश्याम राय | कार्यालय टिप्पण/हिंदी प्रारूपण | तृतीय |
| सौरभ तिवारी | निबंध लेखन | प्रथम |
| अजय कु. विनोदिया | निबंध लेखन | द्वितीय |
| कृति त्रिवेदी | निबंध लेखन | तृतीय |
| अनुग्रह नागाइच | प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली | प्रथम |
| दीपाली बागची | प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली | द्वितीय |
| अजय कु. विनोदिया | प्रशासनिक/तकनीकी शब्दावली | तृतीय |
| अभिनव श्रीवास्तव | सक्रिय सहभागिता | सक्रिय सहभागिता |
| धन बहादुर पून | सक्रिय सहभागिता | सक्रिय सहभागिता |
| आनंद के. सिंह | सुलेख लेखन | प्रथम |
| जितेंद्र कुमार | सुलेख लेखन | द्वितीय |
| सुमित कुमार अहिरवार | सुलेख लेखन | तृतीय |
| सुशील कुमार सोलंकी | स्वरचित कविता पाठ | तृतीय |
| रेनु पाठक | तात्कालिक बोल | प्रथम |
| अजय कु. विनोदिया | तात्कालिक बोल | द्वितीय |
| अनुग्रह नागाइच | तात्कालिक बोल | तृतीय |

**विजय प्रतिभागी – छात्र श्रेणी**

| नाम | प्रतियोगिता | पुरस्कार |
|---|---|---|
| विधुलेखा तिवारी | अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद | प्रथम |
| जयंत कुमार | अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद | द्वितीय |
| अंशिका शर्मा | अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद | तृतीय |
| कार्तिक | भजन/गजल पतियोगिता | प्रथम |
| ओड्रिला सेन | भजन/गजल पतियोगिता | तृतीय |
| जयंत कुमार | डिबेट | द्वितीय |
| जयति दुदानि | निबंध लेखन | प्रथम |
| मुकुल आनंद सिंह | निबंध लेखन | द्वितीय |
| विधुलेखा तिवारी | निबंध लेखन | तृतीय |
| विधि गोयल | सुलेख लेखन | प्रथम |
| श्रुति गुप्ता | सुलेख लेखन | द्वितीय |
| मोह.मुस्लिम अंसारी | सुलेख लेखन | तृतीय |
| अक्षय शर्मा | स्वरचित कविता पाठ | प्रथम |
| जयंत कुमार | स्वरचित कविता पाठ | द्वितीय |
| जयति दुदानि | तात्कालिक बोल | प्रथम |
| विधुलेखा तिवारी | तात्कालिक बोल | द्वितीय |
| जयंत कुमार | तात्कालिक बोल | तृतीय |

| सामूहिक प्रतियोगिता परिणाम | | |
|---|---|---|
| समूह ब – सौरभ तिवारी, शानु शर्मा श्वेता कंडारी, अमित खरे | हिंदाक्षरी | प्रथम |
| समूह अ– अजय कु. विनोदिया, सुशील सोलंकी रेनु पाठक, निशा गौर | हिंदाक्षरी | द्वितीय |
| समूह ग– नेया यादव, अनुग्रह नागाइच, सावंत गोस्वामी, कुश श्रीवास्तव | हिंदाक्षरी | तृतीय |

## स्वच्छता पखवाड़ा

संस्थान ने बड़े हर्षोउल्लास के साथ स्वच्छता पखवाड़ा दिनांक 16 जनवरी से 31 जनवरी 2020 के मध्य आयोजित किया। उक्त आयोजन में पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित गतिविधियाँ आयोजित की गईः

**स्वच्छता प्रतिज्ञाः** संस्थान के सभी स्टॉफ ने स्वच्छता शपथ ली।

**वृक्षारोपण अभियानः** संस्थान कैंपस में वृक्षारोपण किया गया। संस्थान के सभी स्टाफ ने इस गतिविधि में बहुत उत्साह के साथ भाग लिया।

**डेड फाइल्स/डिस्कोर्डेडड्राइंग/मॉडलः** परिसर में डेड फाइल्स/डिस्कोर्डेड ड्राइंग की वीडिंग की गई। इस आयोजन में संकाय, स्टॉफ और छात्रों ने बहुत सक्रिय रूप से भाग लिया।

**सफाई अभियानः** संस्थान ने परिसर में स्वछता अभियान का आयोजन किया जिसमें संकाय और कर्मचारियों के सदस्यों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। आस पास के गांवों में जागरूकता को बढ़ावा देना (महिला स्वच्छता पर चर्चा, नुक्कड़ नाटक, वॉल पेंटिंग, सेवेदीकरण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जल संरक्षण, बैरियर मुक्त वातावरण आदि)निम्नलिखित के बारे में संदेश फैलाने के लिए जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन निकटवर्ती ग्राम बरखेड़ा सालम और सरदार वल्लभभाई पटेल हायर सेकेण्डरी शासकीय विद्यालय, भोपाल में किया गया।

"व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित एक प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है" - महात्मा गाँधी

कार्यक्रम में निम्नलिखित गतिविधियाँ की गई: फीमेल हाइजीन पर टॉक शो, जल संरक्षण, बैरियर मुक्त वातावरण के संदेश के साथ दीवार पेंटिंग, स्वच्छता के संदेश के साथ वॉल पेंटिंग, संस्थान के छात्रों द्वारा नुक्कड़ नाटक खेला गया ताकि स्वच्छता के बारे में जागरूकता पैदा हो सके। स्वच्छता के बारे में हाई स्कूल में छात्रों को व्याख्यान तथा स्वच्छता और संबद्ध पहलुओं पर पोस्टर की तैयारी और प्रदर्शन।

## गणतंत्र दिवस समारोह

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल के नवीन परिसर में 69 वां गणतंत्र दिवस समारोह 26 जनवरी 2020 को मनाया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. (डॉ.) एन. श्रीधरन ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। प्रो. श्रीधरन ने अपने उद्‌बोधन में वर्ष 2019 के दौरान हुई संस्थान की उपलब्धियों के बारे में बताया। संस्थान के छात्रों ने इस अवसर पर गीत एवं नृत्य का प्रदर्शन किया। उत्सव में संस्थान के संकाय सदस्य, अधिकारीगण, कर्मचारीगण व बड़ी संख्या में छात्र–छात्राएं उपस्थित थे।

## स्वतंत्रता दिवस समारोह

संस्थान परिसर में 15 अगस्त 2020 को भारत का 74 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक ने ध्वजारोहण किया व सुरक्षा गार्ड ने राष्ट्रीय ध्वज को सलामी दी। उन्होंने अपने उद्‌बोधन में संस्थान में किये जा रहे भूपरिदृश्य (लेंडस्केपिंग) की प्रगति के बारे में बताया। एस.पी.ए. परिसर के बच्चों ने उक्त दिवस पर गीत एवं कविताएं प्रस्तुत की।

# स्पिक मैके

स्पिक मैके (सोसायटी फॉर प्रमोशन ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूजिक एण्ड कल्चर असिस्टेंट यूथ) का योजना एवं वास्तुकला विद्यालय में आयोजित कार्यक्रमों में से एक कार्यक्रम है। जिसमें अंतर्राष्ट्रीय स्तर के ख्याति प्राप्त व जाने माने कलाकारों द्वारा समारोह का आयोजन संस्थान स्तर पर किया जाता है। स्पिक मैके द्वारा किये गए कार्यक्रम निम्नलिखित हैं:

1. प्रसिद्ध बांसुरी वादक श्री शशांक सुब्रमण्यम (वर्ष 2009 के ग्रैमी आवार्ड नामिनी एवं 16 अप्रैल 2019 को संगीत नाटक अकादमी सीनियर अवार्ड 2017 से सम्मानित) द्वारा गायन कार्यक्रम।
2. प्रख्यात नृतक सुश्री कविता देवी (10 अप्रैल 2020 को ओडिसा संगीत नाटक अकादमी में अवार्ड से सम्मानित)द्वारा नृत्य एवं गायन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दोनों कलाकारों ने छात्रों और स्टाफ के साथ संबंधित आर्ट फार्म की मुख्य विशेषताओं को प्रदर्शित किया और साझा किया। डॉ. देवर्षि चौरसिया, सहायक प्राध्यापक, वास्तुकला विभाग द्वारा कार्यक्रमों का समन्वयन किया गया। कार्यक्रमों में संस्थान के संकाय सदस्य, स्टॉफ व छात्र छात्राएं उपस्थित थे।

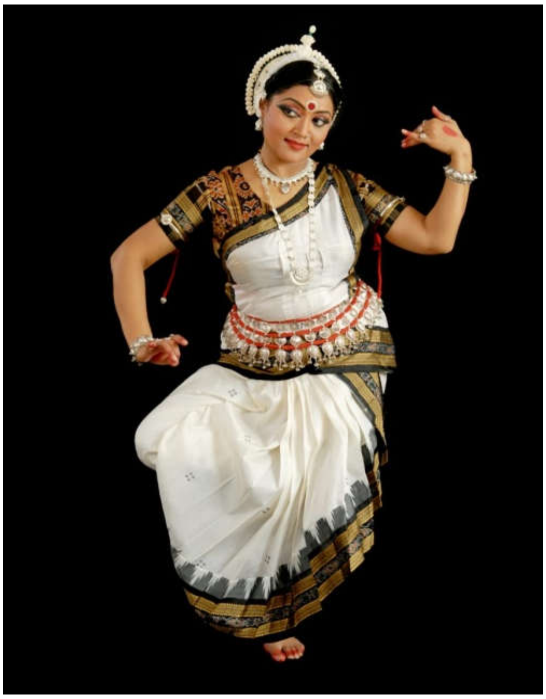

"तीन चीजें ज्यादा देर तक छुप नहीं सकतीं सूरज, चंद्रमा और सत्य"—गौतम बुद्ध

## खेल गतिविधियाँ

सत्र 2019–20 में संस्थान के छात्रों द्वारा उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया। एस.पी.ए. भोपाल के खेल दल ने प्रथम बार एस.पी.ए. विजयवाड़ा द्वारा आयोजित इंटर एस.पी.ए. प्रतियोगिता 13–15 फरवरी 2020 को लगातार 5 वीं बार जीतकर अपराजेय टीम का रिकॉर्ड बनाया। संस्थान की टीम ने बास्केटबॉल, क्रिकेट, फुटबाल बैडमिंटन, टेबल टेनिस, कबड्डी, वॉलीबाल एवं एथेलेटिक्स में भाग लेते हुए जीत का परचम लहराया। जिसमे फुटबाल फाइनल मैच की जीत जो की पहली बार भोपाल के खाते में आई एवं बड़े अंतराल से ओवरऑल चैंपियन का खिताब एस.पी.ए. भोपाल के पास रहा।

28 फरवरी से 1 मार्च 2020 को संस्थान में आयोजित खेलकूद प्रतियोगिता सिनर्जी में भी सभी कक्षाओं के छात्र छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर अलग–अलग खेल प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया एवं सभी खेलों में पूरे जोश के साथ प्रदर्शन कर अपनी–अपनी टीम को जिताया। सिनर्जी प्रतियोगिता में निदेशक महोदय नेसभी विजयी खिलाड़ियों को पुरस्कृत करसभीप्रतिभागयों का उत्साहवर्धन किया।

संस्थान में इन बड़े आयोजनों के अलावा इंटर बैच प्रतियोगिताएं बास्केटबॉल, फुटबॉल, टेबल टेनिस, क्रिकेट, कबड्डी, वॉलीबाल, बैडमिंटन एवं फुटसाल आदि खेल जो कि सप्ताहांत में आयोजित की जाती रहीं जिससे खिलाडियों के अंदर खेल भावना एवं प्रतियोगितात्मक विकास संभव हो।

### सतर्कता जागरूकता सप्ताह

संस्थान ने 28 अक्टूबर से 2 नवंबर 2019 के दौरान सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया। 31 अक्टूबर को अकादमिक भवन में संस्थान के संकाय सदस्यों और कर्मचारियों के द्वारा सतर्कता प्रतिज्ञा ली गई। 2019 के सतर्कता सप्ताह के विषय पर प्रकाश डालने के लिए बैनर, प्रवेश द्वार, शैक्षणिक व प्रशासनिक ब्लॉक में तथा छात्रावास में सतर्कता के विषय पर हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर पोस्टर प्रदर्शित किए गए।

# छात्र गतिविधि एवं उपलब्धियाँ

## *स्पर्श ड्रामा सोसायटी*

- 8 अगस्त – सोसायटी परिचयात्मक सत्र
- 15 अगस्त – स्वतंत्रता दिवस (मंचीय नाटक – अनसंग हीरो)
- सितम्बर – बरखेड़ा सालम (नुक्कड़ नाटक 'पानी')
- 12 से 13 सितंबर – रामलीला ऑडिसन्स
- 14 से 16 अक्टूबर – रामलीला
- 17 से 19 जनवरी – काशीयात्रा 2020 (आई. आई.टी. बी.एच.यू. का वार्षिक उत्सव) (मंचीय नाटक 'अनीता')
- 26 जनवरी – नुक्कड़नाटक
- 19 फरवरी – बुनो कहानी (इंटरएक्टिव गेम नाइट)

सत्रः स्ट्रेस समाप्त करने और एक–दूसरे को बेहतर तरीके से जानने के लिए सोसायटी के द्वारा नियमित सत्र आयोजित किए जाते हैं जिसमें वॉयस एक्सरसाइज, ट्रस्ट बिल्डिंग एक्सरसाइज, इंप्रूवमेंट एक्ट एक्सरसाइज, कॉन्संट्रेशन एक्सरसाइज, थिएटर आर्ट और बार–बार मूवी स्क्रीनिंग के बारे में व्यावहारिक पाठ शामिल होते हैं।

अन्य कार्यक्रम – मीडिया कार्यक्रम
नुक्कड़ नाटक – काल कोठरी

## *प्रिशा क्लब*

- 18 सितंबर 2019 – रक्तदान शिविर (स्वयंसेवक – 15)
- 18 अक्टूबर 2019 – संग्रह ड्राइव
- 20 अक्टूबर 2019 – दान अभियान (2 स्लम क्षेत्रों में) (स्वयंसेवक– 30)
- 17 नवंबर 2019 – शीतकालीन खेल (स्वयंसेवक – 30)
- स्वच्छ भारत अभियान – बरखेड़ा सलाम

## *ई स्पोर्ट क्लब*

- 5 सितंबर, 2019, समिति की परिचयात्मक बैठक।
- 27 सितंबर, 2019, काउंटर स्ट्राइकः ग्लोबल अफेन्सिव। (अनौपचारिक)

दिनांक 21 से 23 फरवरी 2020 के मध्य 3 दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार के ई–स्पोर्ट्स शामिल किये गए, जिसमें मोबाइल गेम, गेम्स बोर्ड और कार्ड गेम जैसे शतरंज, लूडो, यूनो और मोनोपॉली कार्ड शामिल किये गए, ताकि यह प्रतिस्पर्धा संस्थान के सभी छात्रों के लिए समावेशी हो सके के।

## *कला एवं शिल्प समिति*

- प्रथम वर्ष के छात्रों के साथ स्वतंत्रता दिवस स्टेज सजावट (15/08/2019)
- हाथ से बने पोस्टर का विषय 'हम नए जमाने के भारत' के साथ बनाया गया था।
- गौरव पटेल (चतुर्थ वर्ष बी. आर्क.), (27/08/2019) द्वारा लाइव स्केचिंग परिचयात्मक सत्र
- फ्री स्केच बनाते समय स्केल और अनुपात की त्वरित स्केचिंग और बुनियादी समझ का परिचय सीखा गया था।
- पेन और पेंसिल रेंडरिंग सेशन (16/09/2019)
- प्रथम और द्वितीय वर्ष के छात्रों को रोटिंग पेन, उनके उपयोग और रेंडरिंग के विभिन्न तरीकों से परिचित कराया गया।
- शहरी स्केचिंग कार्यशाला का परिचय मयंकवर्मा (छात्र, संरक्षण) द्वारा (20/09/2019) शहरी स्केचिंग के लिए मूल परिचय, विधियों, शैलियों और तरीकों को सिखाया गया।
- रामलीला 2019 (07/10/2019 से 14/10/2019) प्रोप डिजाइन 40 से अधिक जीवन आकार के प्रॉप्स रामलीला नाटक

केलिए प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के छात्रों द्वारा 40 से अधिक डिजाइन और बनाए गए थे।

- इंकटोबर2019, एक महीने की डूडल चुनौती जहां छात्रों को प्रत्येक दिन नए संकेत दिए गए थे। छात्रों ने डूडलिंग कौशल विकसित किया और 100 से अधिक कला कार्यों का उत्पादन किया, 01/10/2019 से 31/10/2019।
- द्वितीय वर्ष के छात्रों के साथ कलवर 2019 के लिए सजावट, 22/11/2019।
- स्थानीय प्राथमिक विद्यालय के परिसर में स्वच्छ भारत अभियान के तहत दीवार पेंटिंग 25/01/2020।
- स्कूल परिसर की दो दीवारों का ''वनों की कटाई '' और ''महासागरों के संरक्षण'' के विषयों के संदर्भ में चित्रित किया गया था
- प्रथम वर्ष के छात्रों के साथ गणतंत्र दिवस के मंच की सजावट, 26/01/2020।
- हाथ से चित्रित पोस्टर और ओरिगेमी भित्ति को 'विविधता में एकता' विषय के साथ बनाया गया था।
- अर्बन स्केचिंग – गोहर महल और मस्जिद माजिसाहिबा क्षेत्र के लिए स्केच वॉक, 15/02/2020।
- भोपाल तक शहरी स्थानों का पता लगाने और उन्हें स्केच के रूप में व्याख्या करने के लिए स्केच वॉक का आयोजन किया गया था।
- स्वतंत्रता दिवस की सजावट
- लाइव स्केचिंग सत्र
- इंकटोबर 2019 की कलाकृतियाँ
- रामलीला 2019 के रंमंच की सजावट
- स्वच्छ भारत पहल के लिए दीवार पेंटिंग (विषय – हमारे महासागरों को साफ करें)
- शहरी स्केचवॉक

> ''इससे पहले की सपने सच हों, आपको सपने देखने होंगे''
>
> डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम

## साहित्य समिति

- अनौपचारिक इंटरैक्टिव सत्र जुलाई और अगस्त के महीनों में आयोजित किए गए थे।
- साहित्य और वर्तमान मामलों पर चर्चा के साथ अनौपचारिक बैठकें।
- सोशल मीडिया के माध्यम से ऑनलाइन कार्यक्रम जैसे लिबर्टी 2019 – इंस्टाग्राम हैंडल पर अक्टूबर 2019 में जारी किए गए संकेतों के साथ एक माह की लेख प्रतियोगिता।
- लिटिवेक – 28 अक्टूबर से 1 नवंबर 2019 तक प्रतिदिन इंस्टाग्राम हैंडल पर जारी विशेष चुनौतियों के साथ पांच दिवसीय लंबी लेखन प्रतियोगिता।
- ऑनलाइन क्विज – अप्रैल और मई 2020 के महीनों में इंस्टाग्राम अकाउंट में आयोजित विभिन्न विषयों पर सार्वजनिक ऑनलाइन क्विज।
- पुस्तक आदान–प्रदान समय–समय पर पढ़ने और चर्चा की सुविधा के लिए, दिनांक 18 अक्टूबर, 25 अक्टूबर, 18 नवंबर 2019, 24 जनवरी 2020 को आयोजित किया गया।
- कविता शाम –स्वरचित कविताओं को साझा करने वाले छात्रों के साथ अनौपचारिक सभा, 31 अगस्त, 8 सितंबर, 20 अक्टूबर 2019।
- हैलोवीन नाइट – एक थीम जिसमें थीम पर आधारित क्विज, वेशभूषा और कहानी कहने के सत्रों में ड्रेसिंग–अप शामिल है। 8 नवंबर 2019 को आयोजित किया गया।
- स्लैम कविता – एक औपचारिक घटना जिसमें छात्रों ने एक दर्शकों के सामने कविताएँ सुनाई। 26 फरवरी 2020 को आयोजित किया गया।

## संगीत समिति

- 7 अगस्त 2019: कराओके नाइट 2019
- 9 अगस्त 2019: समिति परिचय सत्र
- 15 अगस्त 2019: स्वतंत्रता दिवस 2019
- 17 अगस्त 2019: गिटार क्लासेस

- 23 अक्टूबर 2019: डस्क: इनफार्मल जेमिंग सेसन
- 17 से 19 जनवरी 2020: काशीयात्रा 2020 (आई.आई.टी. बी.एच.यू. का वार्षिक उत्सव)।
- 26 जनवरी 2020: गणतंत्र दिवस

## फैशन समिति

- आई.आई.एस.ई.आर. फैशन प्रतियोगिता – नयना डी ने मिस फोटोजेनिक का खिताब जीता
- इनयान 20– एस.पी.ए., विजयवाड़ा फैशन शो

## छायाचित्र समिति

- अनौपचारिक इंटरैक्टिव सत्र सेमेस्टर प्रारंभ में आयोजित किया गया था ताकि क्लब के कामकाज के बारे में फ्रेशर्स को एक संक्षिप्त अवलोकन दिया जा सके। अक्टूबर के अंत में फोटो सप्ताह का एक ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- इवेंट कवरेज: अन्य क्लबों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रम पूरे शैक्षिक सत्र 2019–20 में कवर किए गए थे।
- रामलीला, स्पर्ष द्वारा आयोजित, हमारे नाटक क्लब का दस्तावेजीकरण किया गया था।
- डस्क एक अनौपचारिक कार्यक्रम था, जिसे हमारे कॉलेज के संगीत समिति द्वारा आयोजित किया गया था।
- फ्रेशर्स, क्लब बाकी इवेंट को देखने के साथ–साथ हमारे कला समिति द्वारा बनाई गई एक फोटोबुक के संचालन में विशेष भूमिका में थे।
- संगीत समिति द्वारा आयोजित आनंदमय कराओके कार्यक्रम आयोजित किया गया।
- हमारे संस्थान के सभी खेल गतिविधियों का प्रलेख संस्थान के सिनर्जी कार्यक्रम में समाहित किया गया है।
- सिनर्जी के दौरान एक कार्यशाला एवं प्रदर्शनी की योजना बनाई गई थी, लेकिन कोविड 19 महामारी के कारण आयोजित नहीं किया जा सका।

## इंटर कॉलेज प्रतियोगिताएं

- तूर्यनाद नृत्य प्रतियोगिता–मैनिट, भोपाल
- काशीयात्रा 2020, आई.आई.टी. बी.एच.यू.
- इयान 2020, एस.पी.ए. विजयवाड़ा विलेय – नृत्य समिति का नृत्य सत्र
- सत्र 1: बॉलीवुड फंक (3 दिवसीय– 20, 23 अगस्त और 17 सितंबर 2019)
- सत्र 2: हिप–हॉप (2 दिवसीय– 20, 24 सितंबर 2019)
- सत्र 3: फ्रीस्टाइल फेमजज (1 दिवसीय– 26 सितंबर 2019)
- सत्र 4: अवधारणा निर्माण और प्रदर्शन नृत्य (1 दिवसीय– 1 अक्टूबर 2019)
- सत्र 5: भरतनाट्यम (1 दिवसीय– 4 अक्टूबर 2019)
- सत्र 6: गरबा (4 दिवसीय– 9 से 12 अक्टूबर 2019)
- सत्र 7: बेली डांस (2 दिवसीय– 18, 22 अक्टूबर 2019)
- सत्र 8: कॉलीवुड नृत्य (1 दिवसीय –18 फरवरी 2020)

## अन्य इवेंट

- 8 अगस्त 2019: समिति परिचय जेम।
- 15 अगस्त 2019: स्वतंत्रता दिवस 2019।
- 13 सितंबर 2019: तूर्यनाद 2019 (भारतीय सांस्कृतिक कला रूपों को पुर्नस्थापित करने के लिए मैनिट भोपाल द्वारा आयोजित एक उत्सव) 3 टीमों ने हमारे कॉलेज से भाग लिया था और उनमें से 2/3 ने तीसरा और पहला पुरस्कार हासिल किया था।
- 4 अक्टूबर 2019: अनौपचारिक जेमिंग सत्र।
- 11 अक्टूबर 2019: नृत्यंजलि (स्थापना दिवस) 2019।
- 6–8 नवंबर 2019: विला टीम के लिए ऑडिशन 2019।
- 7 दिसंबर 2019: नृत्य सत्र।

- 28 दिसंबर 2019: नोज़प्लान– डांस श्रेणी में दूसरा स्थान, सर्वश्रेष्ठ कोरियोग्राफर काकली डेका को मिला
- 17 से 19 जनवरी 2020: काशीयात्रा 2020 (आई.आई.टी. बी.एच.यू. का वार्षिक उत्सव)
- 14 फरवरी 2020: नोज़प्लान 20 (एसपीए विजयवाड़ा में इंटर फेस्ट सहायता) नव्या तनेजा ने सोलो डांस प्रतियोगिता में पहला स्थान हासिल किया।
- 28 फरवरी 2020: सिनर्जी स्पोर्ट्स ओपनिंग सेरेमनी।
- 23–30 मार्च 2020: फोटो 2020 (सप्ताह भर चलने वाली आभासी नृत्य चुनौती)
- 12 अप्रैल 2020:ADVAYA 2k20इंटरकॉलेज नृत्य प्रतियोगिता (ऑनलाइन नृत्य प्रतियोगिता)
- 15 अप्रैल 2020: CHEMFEST 2k20नृत्य प्रतियोगिता (ऑनलाइन नृत्य प्रतियोगिता)
- 29 अप्रैल 2020: नृत्य प्रतियोगिता– दीप सिसई– हुकुम का इक्का (ऑनलाइन नृत्य प्रतियोगिता)

## छात्रों के पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ

- आदित्य सक्सेना को सेंट जेवियर्स कॉलेज, जयपुर द्वारा आयोजित सतत् विकास के परिप्रेक्ष्य में आई.सी.एस.एस.आर. द्वारा प्रायोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'सतत परिवहन मूल्य निर्धारण' को बढ़ावा देने के लिए रणनीतियाँ में सर्वश्रेष्ठ पेपर का पुरस्कार मिला, परिवहन की बाहरी लागत को शामिल करने के लिए जयपुर में प्रेजेंटेशन का सर्टिफिकेट ऑफ प्रेजेंटेशन मिला। आई.आर.सी.एस. द्वारा आयोजित भारतीय सड़क सुरक्षा अभियान 2020 में आई.आई.टी. बॉम्बे द्वारा मेंटर के रूप में चयनित। आई.आई.टी.– बॉम्बे द्वारा आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में विज्ञान और इंजीनियरिंग विषय पर पेपर प्रस्तुति दी।
- नमिता वर्मा ने अर्बन थिंकर कैंपस में आयोजित अर्बन लैब–'रिज़िलिएंस मीट सस्टेनेबिलिटी' सर्टिफिकेट प्राप्त किया, एन. आई.यू.ए., नई दिल्ली द्वारा दिनांक 25 सितम्बर 2019 को आयोजित 'द रिज़िलिएंट सिटी हमें चाहिए' में भाग लिया एवं प्रस्तुतिकरण।
- अद्वित लिमाय, एन.एल.एस.आई.यू. बैंगलोर द्वारा आयोजित शहरी कल्पनाओं के विषय पर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में विजेता।
- विपुल परमार, आई.आई.टी.–बॉम्बे द्वारा आयोजित अर्बन साइंस एण्ड इंजीनियरिंग (पेपर प्रस्तुतिकरण) के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में 'परिवहन की बाह्य लागत को शामिल करने के प्रभाव' पर श्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण अवार्ड से सम्मानित किया गया।
- विष्णु के सुरेशएवं अमन शर्मा को एम.एम.सी. एफ. द्वारा आयोजित एथोस विरासतः हमारी धरोहर को रोशन करना' पर प्रथम पुरस्कार मिला, दिनांक 13 नवंबर 2019।
- रेवा सक्सेना (तृतीय वर्ष बी. आर्क.), जोफिशान फातिमा (द्वितीय वर्ष, बी.प्लान) कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के वास्तुकला विभाग द्वारा आयोजित 'बर्कले निबंधन प्रतियोगिता' में सेमीफाइनलिस्ट थीं।
- लक्ष्य जासोरिया, आशी शर्मा, ऋषभ कालरा, पारूल गुप्ता 2016 बैच ने अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन प्रतियोगिता के ओपन आइडियास में प्यूपल्स च्वाइस अवार्ड प्राप्त किया जिसे टीम UnfuseUni.xyz for "मेमोरी–रिगेदरिंग सीरिया'"द्वारा आयोजित किया गया था।
- अंजलि गुप्ता, आई.आई.टी. बॉम्बे द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन "ICUSE 2020" 'में संक्रमण में शहरः पुणे महानगर में ज्ञान–आधारित उद्योग की स्थानिक क्लस्टरिंग' विषय पर पेपर प्रकाशित,

आईएसबीएन 978–93–89063–91–2 के साथ प्रस्तुत।

- प्रेरणा जैन ने गेट में AIR-63रैंक प्राप्त किया।
- अखिलेश सिंह को पर्यटन मंत्रालय द्वारा आयोजित एक भारत श्रेष्ठ भारत क्विज प्रतियोगिता में भागीदारी का प्रमाण पत्र मिला।
- गनराघ सिंह, आचार्य संस्थान, बैंगलोर द्वारा आयोजित आनंदपुर साहिब का एक केस पर महाला के लिए डिजाइनिंग में दूसरा पुरस्कार प्राप्त किया तथा कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले के वास्तुकला विभाग द्वारा आयोजित 'बर्कले निबंधन प्रतियोगिता' में सेमीफाइनलिस्ट थे।
- सुकन्या चटर्जी, दिनांक 27–28 फरवरी, 2020 को इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस 'ICUSE 2020' में आई.आई.टी.बॉम्बे द्वारा आयोजित 'शहरी नियोजन और सार्वजनिक नीति में न्यूड थ्योरी' विषय पर पेपर प्रकाशित।
- श्रेयाली अग्रवाल, सयानी मंडल, शम्भवी वैश्नोई, रूपम अरोरा ने इंडिया लास्ट एण्ड फाउण्ड द्वारा आयोजित साइट लेन्स के माध्यम से भोपाल पर शोध पत्र प्रस्तुत कर द्वितीय स्थान हासिल किया, दिनांक से 3 से 29 फरवरी, 2020।
- रेजा प्रसाद, सोहा कुलकर्णी, काकली डेका, अतीरा अरुण कुमार ए.पी. ने तूर्यनाद 2019 के प्रथम समारोह में मैनिट भोपाल में आयोजित भारतीय सांस्कृतिक कला रूपों को पुर्नस्थापित करने के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया।
- अरुणिमा पटेल, चिन्मय बोरा, काकली डेका, रिया पी. जॉन, जोफिशान फातिमा ने इंडिया लास्ट एण्ड फाउण्ड द्वारा आयोजित साइट लेन्स पर प्रथम स्थान हासिल किया।
- अनिशा सूरी, मेघना सिंह, सफिया रहमान, अम्मी चिलात जुदिर ने आचार्य एन.आर.वी. स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर, बैंगलोर, भारत के उत्सवों के अस्थायी स्थलों पर दूसरा स्थान हासिल किया।
- नमिता वर्मा ने प्रथम आकांक्षा पुरानिक को द्वितीय पुरस्कार नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ अर्बन अफेयर्स (एन.आई.यू.ए.) द्वारा आयोजित 'द रिसिलिएंट सिटी वी नीड' पर ऑन–स्पॉट प्रतियोगिता में प्राप्त किया।
- रिद्धित पॉल, विजेता, वास्तुकला विभाग, कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले द्वारा आयोजित निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता।
- जयसमिता भट्टाचार्जी को आई.आई.एच.एस. बैंगलोर द्वारा आयोजित इक्विटी पर शहरीकरण के प्रभाव पर पेपर प्रस्तुति में भागीदारी का प्रमाण मिला।
- मनमीतकौर को श्रीमती के. एल. तिवारी वास्तुकला महाविद्यालय, मुंबई द्वारा आयोजित मेरी बालकनी राष्ट्रीय प्रतियोगिता, यूटोपिया में अनुच्छेद लेखन में विशेष उल्लेख पुरस्कार मिला।
- श्रद्धा राजलोक को आईआईटी बी.एच.यू. द्वारा आयोजित 'स्पिल द टीज' (तूलिका) में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।
- रिद्धित पॉल, बोहमियांस की संस्कृति के प्रदर्शनी के लिए बर्लिन में छात्रावास डिजाइन, अर्काज्म बर्लिन बोहमियांस छात्रावास, दिनांक 25 जुलाई 2019।
- सुसान मारिया थॉमस, एम.आर्क. (लैंडस्केप), 2018–20, पेपर प्रस्तुतिकरण ' शहरी डेवलपर्स की जांच' भारतीय शहरों में सामूहिक चेतना का निर्माण करने के लिए फ्रेमवर्क के रूप में निर्मित पर्यावरणीय मुद्दों की धारणा' विषय पर ICOSS 2019 सम्मेलन के लिए TIIKM ओपन जर्नल सिस्टम के साथ प्रकाशित।
- रिद्धित पॉल, माननीय उल्लेख/विश्व शीर्ष 10, अपनी पसंद के किसी भी समुदाय के लिए एक माइक्रोहाउस डिजाइन करें, वॉल्यूम जीरो माइक्रोहिंग नवंबर 2019।
- रिद्धित पॉल, अभिदीप चक्रवर्ती, आर्किटेक्चर पर बर्कले प्राइज निबंध, फाइनल में फर्स्ट प्लेस, सेमी–फाइनल स्टेज में वर्ल्ड टॉप 25:, निबंध का शीर्षक 'नेस्ट फॉर ए फिनिक्स: बिल्डिंग फॉर डेथ'निबंध का विषय ''कैसे सिविक बिल्डिंग समुदाय को मजबूत करने में मदद करते हैं'', दिसंबर 2019 से फरवरी 2020।

- मेघना, अनीषा सूरी, आकाश कृष्णा राज और अलेमचिला टी जुदिर, 'वर्ल्ड आर्किटेक्चर फेस्टिवल 2019 फॉर स्टूडेंट, फर्स्ट प्लेस, इस साल की थीम 'फ्लो' थी। उन्हें लोगों के प्रवाह, शक्ति, प्रकृति और डेटा की पहचान करनी थी। उनके डिजाइन प्रस्ताव के माध्यम से, ब्रिडिंग द डिस्क्रिमनी– मछली पकड़ने के समुदाय का एक मामला, पेंटाकाटा पुरी, ओडिशा। उन्होंने चक्रवात के दौरान होने वाले असंतुलन की पहचान की, कि कैसे प्राकृतिक आवर्ती प्रवाह मछुआरों को प्रभावित करता है, दिसंबर 2019।
- अरुणिमा पटेल – बी.प्लान द्वितीय वर्ष चिन्मय बोराह – बी.प्लान द्वितीय वर्ष काकली डेका – बी.प्लान द्वितीय वर्ष रिया पी. जॉन बी.प्लान द्वितीय वर्ष, जोफिशान फातिमा – बी.प्लान द्वितीय वर्ष, टीम वन रूपम अरोरा – बी. आर्क. तृतीय वर्ष, शम्भवी विश्नोई बी. आर्क. तृतीय वर्ष, सयानी मंडल बी. प्लान तृतीय वर्ष, श्रीयाली अग्रवाल बी. प्लान तृतीय वर्ष, प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इंडिया लॉस्ट एंड फाउंड का उद्देश्य हमारी बीमार भारतीय विरासत की ओर ध्यान आकर्षित करना है, क्योंकि यह हमेशा के लिए खो जाती है। यह विचार वार्तालाप को प्रेरित करने और इन स्मारकीय अभी तक उपेक्षित अवशेषों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए है, विशेष रूप से युवाओं को जुटाकर, मार्च 2020।

## एस.पी. ए. भोपाल का कोविड –19 महामारी से लड़ने हेतु योगदान

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल, जो कि म.प्र. राज्य के भोपाल शहर के भौरी क्षेत्र में स्थित है। कोविड–19 महामारी से बचाव एवं सुरक्षा हेतु समय–समय पर दिये जा रहे जिला मजिस्ट्रेट के निर्देशों का पालन कर रहा है। इसी तारतम्य में जिला कलेक्टर द्वारा इस आपातकाल में जिला पुलिस जो कि भोपाल शहर की व्यवस्था में लगी हुई है,उनके कोविड–19 टेस्ट की सेवायें उपलब्ध कराने एवं आवास की व्यवस्था सुचारू रूप से कराने हेतु संस्थान प्रशासन द्वारा छात्रावास भवन उपलब्ध कराया गया है। परिसर में रहवासी एवं बाहय लोगों द्वारा क्वारंटाइन एवं कोविड–19 के नियमों का पालन किया जा रहा है। साथ ही जिला मजिस्ट्रेट के आदेशानुसार सीमा सुरक्षा बल जो कि एक केन्द्रीय बल है, जिन्हें इस आपदा में विशेष रूप से सेवा देने के लिए जिले में बुलाया गया है। उनके लिए कोविड टेस्टिंग एवं क्वारंटाइन की सुविधा भी संस्थान परिसर के छात्रावास क्र. 2 में उपलब्ध कराई गई।

इसी संदर्भ में छात्रावास क्र. 2 में विशेष रूप से समयबद्ध कार्यवाही करते हुए छात्रों के सामान की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए वापसी की कार्यवाही की जा रही है। इस कठिन दौर में संस्थानमें सफाई एवं सुरक्षा की विशेष व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। इस महामारी से लड़ने के लिए एवं इसकी जानकारी जुटाने के लिए उपकरण एवं सामग्री उपलब्ध कराई गई जिसका उपयोग सुरक्षा एवं सफाई कर्मचारी द्वारा किया गया।

- आगमन/प्रस्थान पर सुरक्षा कर्मियों द्वारा थर्मलस्कैनिंग के माध्यम से टेम्परेचर रिकार्ड की कार्यवाही की जा रही है।

- फेस मास्क, हेण्डवॉश की व्यवस्था, सेनेटाइजर का उपयोग, सामाजिक दूरी का पालन व अन्य संबंधित कोविड गाइडलाइन के अनुसार किया जा रहा है।

# अभिव्यक्तियाँ

## हाइवे

तेज रफ्तारों का हाइवे
उन्मुक्त फुहारों का हाइवे
अंधे मोड़ों का हाइवे
रोमांचक अचम्भों का हाइवे
खुलेढाबों का हाइवे
अनेक ख्वाबों का हाइवे।

पर अब मजदूरों के पसीने से भीगा हाइवे
चलती माओं के पैरों से सहमा हाइवे
मासूम चित्रकारों से हुआ बहरा हाइवे
ट्रक पर लदे इंसानी बोझ से दबा हाइवे

खड़ा, रुका, थमा है हाइवे
शायद एक ही ओर जाता यह हाइवे।

**सौरभ तिवारी**, सहायक प्राध्यापक

## मौका

आओ जरा साथ चलो तुम भी देखो
बाजार मे क्या-क्या होता है!
घर में रह कर वैसे भी किसी ने
क्या ही कभी कुछ सीखा है!

वहाँ देखो तुल रही है लड़की और
तुम्हारी सोच को एक मौका है।
जरा ठहरो बाएँ देखो, वहाँ उसके
हुनर को किसी ने रोका है,

अब जरा दाएँ देखों, तुम्हारे पास
फिर निकलने का मौका है!
थोड़ा और आगे आओ, वहाँ देखों
उसका हौसला पड़ा मिलेगा तुम्हें।

जरा ध्यान से देखो फिर उसको ये
किसने उसको जकड़ा है!
हो सके तो उठा दो, देदो थोड़ा
हौसला-आज साथ देने का मौका है।

**सरोज वर्मा**, कार्यालय सहायक

# वो इन्सान

वो भी इन्सान होगा।
उनका भी एक परिवार होगा।
सरहद पे रहते हैं,
ताकि हम घरों में रह सकें।
गोलियां झेलते हैं,
ताकि हम वक्त की रोटी खा सकें।।
वो भी इन्सान होगा।
उनका भी एक परिवार होगा।।
हम अपने में जीते हैं,
वो हमारे लिए जीते हैं।
हम रंगों से खेलते हैं,
वो खून से लथ-पथ होते हैं।
हम दिवाली के लिए दिए जलाते हैं,
वो बारूद की आग में जलते हैं।
हम अपनों के लिए रोते हैं,
वो हमारी हिफाज़त में जान देते हैं।
वो भी एक इन्सान होगा,
उनका भी एक परिवार होगा।

क्या सुबह का सूरज उनके लिए,
क्या शाम का पैगाम उनके लिए।
क्या दिन का ढलना उनके लिए,
क्या रातों का बीतना उनके लिए।।
क्या मौसम का बदलना उनके लिए,
क्या ऋतुओं का जाना उनके लिए।।
उनका भी एक सूरज होगा,
उनका भी एक चाँद होगा।।
वो भी एक इन्सान होगा।
उनका भी एक परिवार होगा।।

कोई किसी बेटी का पिता होगा,
तो कोई ईकलोता सहारा होगा।।
कोई बीवी का पति होगा,
तो कोई बहन का भाई होगा।
उनका भी एक दिल होगा,अरमान होगा।
वो भी एक इन्सान होगा।
उनका भी एक परिवार होगा।।

न ज़िन्दगी रूकती है उनके लिए,
वो मौत को जीना जानते हैं।
तूफानों का कोई डर नहीं, वो
हवाओं का रूख बदलना जानते हैं।
पहाड़ो की गोद में खेलते हैं,
और नदियों पर दौड़ लगाते हैं।
वो जान को सर पर रखते हैं,
और सरहदों में सांस लेते हैं।।
वो भी इन्सान होते हैं।
उनके भी परिवार होते हैं।

**अनुपमा भारती**, सहायक प्राध्यापक

## पंख

ये पंख उड़ान के
थोड़े भारी से लगते है!
सोचती हूँ उतार इन्हें,
कन्धों को आराम दूँ।
पर ऊँचाई का लालच
घटता ही नहीं,
बिन पँख मेरा कन्धा
मुझे जचता ही नहीं।

**सरोज वर्मा**, कार्यालय सहायक

# शायद

शायद ये कांपती हुई कलम की स्याही थी
तारीख़ का अज्ञात होना लाज़मी था,
परंतुबारातियों को नजरअंदाज न करना
प्रवृत्ति में कुछ ऐसा घुला था मानो
'राम सेना' के भाँति चल पड़े थे
कुछ मज़े में तो कुछ सजे में।

रिमझिम सी हल्की वर्षा के मज़े लेते
कुछ बूंदों को हलक से उतार रहे थे,कुछ आँसुओं से
लेकिन ये सभी आँसुओं में कब बदल गये।

यूँ तो वक्त मानो थम सा गया था दृश्य को निहारते हुए
मगर आँसू बदलने का सिलसिला न पता चला।
शायद ये काँपती हुई कलम की स्याही थी।

यूँ तो लोग बारातियों को अक्सर मवेशियों की नज़रों से ही
व्याख्या किया करते परन्तुस्टेशन पर गोलाकार में खड़े होकर
मानो हम खुद को वैसा ही मान रहे थे।

पिताजी के हक का वर्चस्व तो हम बारातियों को
मृत से पड़े डब्बों में चढ़कर हुआ और कुछ तो सच में
'बापू का माल' बना 'डोंगा-पानी' का खेल भी शुरू कर दिये
और सभी मंजिल की ओर कदम बढ़ा चले।

परन्तु मन में कुछ शंकाओं का पनपना
अथवा बारातियों का मित्रों या सामान्य यात्रियों की विडंबना .....

शायद ये काँपती हुई कलम की स्याही थी।

**शिवांशु शेखर**, छात्र, बी. प्लान

# काश!! मैं कुम्हारन होती

काश!! मैं कुम्हारन होती,
जिन्दगी के पड़ावों को मनचाहा आकार देती।।

कभी बचपन की मुस्कुराहट को खिलौनों में कैद करती,
तो कभी चाय की तलब को कुल्हड़ में।
कभी गुड़गुड़ाते हुए धुंए को हुक्के में भरती,
तो कभी मदिरा की कशिश को प्याले में।।
काश!! मैं कुम्हारन होती,
जिन्दगी के पड़ावों को मनचाहा आकार देती।।

कभी दिवाली की रौशनी को दिए की टिमटिमाहट देती,
तो कभी पिया मिलन की आस को करवे में।
कभी एक नन्हे पौधे को गमले में जनम देती,
तो कभी लस्सी की मिठास को मटके में।।
काश!! मैं कुम्हारन होती,
जिन्दगी के पड़ावों को मनचाहा आकार देती।।

कभी सच्ची आस्था को भगवान् का रूप देती,
तो कभी किसी के यौवन को मूरत में।
कभी किसी के अरमानों को सुराही में सजाती,
तो कभी साज-सज्जा को फूलदान में।।
काश!! मैं कुम्हारन होती,
जिन्दगी के पड़ावों को मनचाहा आकार देती।।

मिट्टी तो महज़ एक एहसास है,
ख़यालों को सच्चाई में तब्दील करने के लिए।
जिन्दगी तो बस इत्तेफाक है,
मिट्टी में जनम लेने और उसमें मिल जाने के लिए।।
काश!! मैं कुम्हारन होती,
जिन्दगी के पड़ावों को मनचाहा आकार देती।

**अनुपमा भारती**, सहायक प्राध्यापक

## किताब

वो भी क्या दिन थे
जब हाथों में किताब होती
हर सफर में वो साथ होती
थोड़ा खुशनुमा सा वक्त रहता
कुछ सीखने समझने की बात होती
जब हाथ में किताब होती
अब तो उंगलिया मोबाइल पर
आँखें लैपटाप पर
यु सुबह होती
ऐसे ही शाम होती
वो भी क्या दिन थे
जब किताब साथ होती

बरसात के मौसम में
चाय के प्याले के साथ
कभी मुंशी जी का साथ होता
कभी मंटो, इकबाल की
कभी कलाम की बात होती
सूखे गुलाब का मिलना
बंद पुरानी किताबों में
महज इत्तेफाक़ रह गया
अब न वो मुहब्बत होती
न किताब होती
न वो शाम होती
न कोई याद होती.......

**जीशान अहमद**, छात्र (परिवहन योजना एवं रसद प्रबंधन)

## विदाई

तुम क्या गए सब ले गए
रूह ले गए सांस ले गए।

जिनसे रोशन थी मेरी रातें,
वो नींद ले गए वो ख्वाब ले गए।
बीतने को तो बीतेगी ये जिन्दगी
जिन्दा रहने के पर अरमान ले गए।
जाऊँ कहाँ कि कुछ मालूम नहीं
तुम रास्ता ले गए तुम मंज़िल ले गए।

**कुश श्रीवास्तव**, लेखापाल

## ये नया नार्मल है

अब यही नार्मल है ।
हाँ ये नया नार्मल है ॥
मास्क, सेनेटाईजर, हैण्ड-वाश
ये पक्के साथी ।
दो गज दूरी और इम्युनिटी
रक्षा कवच हमारी ॥
क्योंकिअब यही नार्मल है।
हाँ ये नया नार्मल है ॥

शादी - पार्टी, भीड़-भड़ाका,
अभी बचो भाई ।
हाट- बाजार, सैर-सपाटा,
अभी रुको भाई ॥
क्योंकिअब यही नार्मल है।

है ये नया नार्मल है ।।
सर्दी-खांसी, अधिक तापमान
ये लक्षण सारे।
तो करलो कान खड़ेकि कोरोना
तुमको न जकड़ें।।
रहो सुरक्षित, रखो सुरक्षित सबको ।
देखो अब ये न फैलें,
भाई अब ये न फैले।।
क्योंकिअब यही नार्मल है।
हाँ ये नया नार्मल है।।

भारी संकट पड़ा धरा पर,
जनजीवन चौपट।
नमन है मेरा उन पुत्रों को न देखी
अपने घर की चौखट।।
लड़ी लड़ाई कोरोना से,
अब भी ये जारी।

डॉक्टर, पुलिस सफाईकर्मी,
अहसान बड़ा भारी।।
क्योंकि अब यही नार्मल है।
हाँ ये नया नार्मल है।।

तुम भी अपनी कमर बाँध लो
हारेगी बीमारी।
फिर से करो शुरुआत काम की
निभाओ जिम्मेदारी।।
परिवार, समाज, देश, को
फिर से मजबूत बनायेंगे।
आशा करो प्रभु से
कोरोना पर ब्रम्हास्त्र चलाएंगे।।
क्योंकिअभी तो यहीं नार्मल है।
ये नया नार्मल है।।

**रेनु पाठक**, पुस्तकालय सहायक

## नया नया साल, नया परिदृश्य

सोचा न था एक ऐसा साल भी आएगा,
गले मिलने वाला हाथ भी ना मिलाएगा।
वो समय जब सब परदानशीन हुआ करते थे,
सोचा ना था वो समय फिर लौट कर आजाएगा।

हर तरफ बचते लोग हर चेहरे पे मास्क पड़ा,
पता ही नहीं चला ये रोग कब और कैसे बढ़ा।
जो पड़ा रहता था दुकानों के एक कोने में,
वो सेनेटाइज़र आज जरूरी हो गया है हाथों को धोने में।

ज़िन्दगी थम गई सब वीरान हो गया,
शहर गली मोहल्ला सब सुनसान हो गया।
घर की चार दीवारी में सिमट कर रह गया संसार,
बंद हो गई दुकानें ठप्प हो गए व्यापार।

नौकरी गई, घर छूटा, हालत हो गई इस कदम,
खोजने एक-एक निवाला भटकते फिर दर-ब-दर।
त्यौहार सारे सूने गुजर गए एक-एक करके,
रिश्तेदार मिलते नहीं कोरोना से डरके।

ना कोई किसी के घर जाता हैना घर बुलाता है,
हर शक्स फोन पर ही मिलने की औपचारिकता निभाता है।
अब यही रहेगा 'नए साल का नया परिदृश्य',
बदल गया वक्त, असामान्य हो गया हर सामान्य,
बदल गया हर दृश्य।

**स्वपनिल लौवंशी,** कनिष्ठ सहायक

## माँ

माँ मुझे तुम जैसा बनना है,
बिंदी लगा कर!
पर नहीं चाहिए! वो निशान माथे पर
जिसे तुम जरूरी कहती हो।

माँ मुझे तुम जैसा बनना है,
पायल पहन कर!
पर नहीं सुनने वो ताने! जिससे तुम
समाज के नियम कहती हो।

माँ मुझे तुम जैसा बनना है,
बहुत आगे बढ़ना है।
जैसे तुम रोज दफ्तर जाती हो
साड़ी पहन कर!
पर नहीं बंधना कहीं
जहां दम घुटता हो।
सीखना है मुझे सलीका
तुम्हारा उठने बैठने का।
पर नहीं चाहती कोई और बताए
मुझे तरीका! सड़क पर चलने का,
जैसे तुम रहती हो वैसे ही सब
करना है।
पर नहीं रहना उस तरीके से जिसे
तुमसबसे सुनकर लड़कियों का
तरीका कहती हो!

माँ मुझे तुम जैसा बनना है,
तुम्हारी छवि दिखना है
पर वैसे जैसे तुम चाहती हो!
ना किसी रीत की तरह ना जैसे
कोई और चाहता हो।

**सरोज वर्मा,** कार्यालय सहायक

> "घृणा को घृणा से खत्मनहीं किया जा सकता,बल्कि इसे प्रेम से खत्मकिया जा सकता हैजो कि एक प्राकृतिकसत्य है"-गौतम बुद्ध

## प्राण

वो जिसने आज त्याग दिये अपने प्राण,
न जाने वो ले गया कितनों की जान।
माँगा था उसने केवल अन्न का दान,
कहाँ चाहा था कोई विशेष सम्मान।
मेहमान बनकर आये थे तेरे बुलाने से,
मालुम न था निकलेगा कातिल मेज़बान।
चादर हटाता पत्थर को जगाता नहीं उसे भान,
किलकारियां भरकर मुर्दे से खेलता वो नादान।
मूक बने यूँ खड़े हैं जैसे नहीं कुछ ज्ञान,
इंसानियत को मारकर कैसे बनेगा तू इन्सान।

**कुश श्रीवास्तव**, लेखापाल

## एक बचपन ही तो है

एक बचपन ही तो है जो खुश रहता है,
बाकी तो उम्र बीत जाती है समझने में।

एक बचपन ही तो है जो चंचल है,
अब तो वक्त भी जरूरतों का हुआ।

एक बचपन ही तो है जिसने ख्वाब देखे,
वर्ना तो मन बंधा है बस पैसे कमाने में।

एक बचपन ही तो है जो नादान है,
इस दौर में समझ ही नासमझी हो गई।

एक बचपन ही तो है जो थक कर सोता,
अब तो वक्त कट रहा है अँधियारे में।

एक बचपन ही तो है जो सब कर लेता है
अब क्या! लगे हैं
सब बचपन को सजाने में।

**सरोज वर्मा**, कार्यालय सहायक

## हमारे प्रधान मंत्री

शत शत नमन मां हीरा बा को
जिसने नमो सा रत्न दिया जग को
दीन गरीबी में पालकर
पथ प्रशस्त किया पति के पग को

बचपन जिसका गरीबी में बीता
ओर जवानी त्याग भरी
राष्ट्र भक्ति का जज्बा लेकर
जीवन यात्रा शुरू करी

तीन वर्ष हिमालय में बिताए
गंगा मां को वचन दिया
मठ मंदिर में रहकर के
संतो का आशीर्वाद लिया

लोकतंत्र के मंदिर को
जबझुक कर प्रणाम किया
भारत माता गदगद हुई
जन जन ने गुणगान किया

सर्जिकल स्ट्राइक करके
दुश्मन को ललकार दिया
नोटबंदी का लेकर फैसला
भ्रष्टाचार पर प्रहार किया

३७० को हटाकर
कश्मीरियों का उद्धार किया
३ तलाक का कानून बनाकर
मुस्लिम बहनों को उपहार दिया

असाध्य रोग के उपचार में
जैसे कड़वी दवा जरूरी है
राष्ट्र हित में कठोर निर्णय लेना
एक मजबूरी है।
आशा भरी निगाहों से
जनता तुम्हे निहार रही
भूमि पूजन के बाद मंदिर के
भव्य मंदिर निर्माण कराओ
जनता तुमसे चाह रही

आशा की एक किरण जगी है
गरीब ओर अनाथों में
भारत हमने सौंप दिया
अब मोदी जी के हाथो में

बढ़े चलो तुम आगे मोदी जी
चिंता की नहीं बात है
भारत की अब तो पूरी जनता
संघर्ष में तुम्हारे साथ है।

**श्री आर.एस. उपाध्याय**
**मुकेश उपाध्याय,** सहायक क्रीड़ा अधिकारी

## चिड़िया

मेरा स्वभाव उस चिड़िया जैसा
जो चुन चुनकर उन अन्न के दाने
चुटकी से पेट भर खा लेती है।
कुदरत के दाने धरती पर छोड़कर
जाने कितने पेड़ उगा जाती है।
मेरा स्वभाव उस चिड़िया जैसा

जो पूरे मन से गुन-गुनाकर
अपनी असली पहचान दिखाती है।
जब गाती तब ऐसे लगता जैसे कि
कोई देवता ने संदेश भेजा है।

मेरा स्वभाव उस चिड़िया जैसा
जो ईश्वर का एक तोहफा समझकर
उन बहती लहरों का पानी
पी जाती है।
जिसके लिए पानी का हर बूंद
बहुत सुंदर और अदभुत हो।
मेरा स्वभाव उस चिड़िया जैसा
जो सुंदर नीले आसमान में उड़कर
पूरी धरती की हर जगह
जान लेती है।
रात के उन चमकते तारों
को देखकरअपने अंदर की उस
रोशनी को जगाती है।

**शोनी अरोरा**
**श्वेता सक्सेना**, सहायक प्राध्यापक

## प्रकृति

प्रकृति भी अपना बदला लेती है
घनघोर घटायें घिर रही, घन भी घड़घड़ाहट कर रहे ।
दामिनी दम दम दमक रही, ये दिन को रात कर रहे ।।
ओलावृष्टि भी हो रही, धरती भी सफेद चादर ओढ़ रही ।
चारो ओर हाहाकार मचा, कैसी भू पर अनावृष्टि हो रही ।।
चारो तरफ जीवन अस्त-वयस्त है, मानव जाती संकट में है ।
चारो तरफ अँधेरा छा गया ये कैसी हालत हमारी हो गयी ।।
कभी किसी ने ये सोचा है, हम पर संकट क्यों आता है?
जब अनाचार बढ़ जाता है, दुनिया में तब ऐसा होता है ।।
मत काटो तुम पेड़ पौधों को, न प्रकृति का तुम दोहन करो ।
प्रकृति भी अपना बदला लेती है, न उस पर कभी वार करो ।।
यह किसी इंसान का संदेश नहीं, यह प्रकृति का कड़ा आदेश है ।
इसको मानो या न मानो तुम, ये केवल प्रकृति का निर्देश है ।।
अनाचार करने ने से पहले सोचो क्योंकि फल मिलने का समय आता है तो सोचने की कोई गुंजाइश नहीं होती है।

**सिस्टा श्रीनिवास राव**, निज सहायक

# कोरोना आत्मनिर्भर भारत के लिए अभिशाप या वरदान

कोरोना ने अकल्पनीय और अभूतपूर्व संवाद पैदा कर दिया है किंतु उसके मुकाबले टूटना–बिखरना मानव जाति का स्वभाव नहीं है। इसलिए हम यदि इसको जीतने में असफल भी रहे तो अपेक्षित सावधानी बरतते हुए इसके साथ–साथ जीने को प्रयत्नों को भी बढ़ावा देंगे तो जीत का पताका लहरायेंगे। कोरोना को संकट नहीं अपितु उस अंधकार के रूप में मानना चाहिए जिसके बाद सवेरा निश्चित है। कोरोना ने भारत के लिए आत्मनिर्भरता का पथ प्रशस्त किया है। यह एक सुनहरा अवसर है। भारत में कुशल और अकुशल कामगारों की संख्या करोड़ो में है। सारी दुनिया के देशों की तुलना में सबसे ज्यादा युवा आबादी यहां है। अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, साउथ कोरिया जैसे देशों के उद्योगपति चीन से बाहर निकलना चाहते हैं। अतः आपदा को अवसर में बदलने का भारत के पास एक नया अवसर है। दुनिया के पूंजीपतियों और उद्योगपतियों को भारत में निवेश करने के लिए आमंत्रित करने का कोरोना ने अद्भुत मौका प्रदान किया है। बस आवश्यकता है हमारे नीतियों में परिवर्तन कर स्वयं को विश्व गुरू के रूप में स्थापित करने के अवसर को हाथ से न निकलने देने की, लोगों के बीच में आशा के नए दीप जलाकर आर्थिक एवं न्याय के क्षेत्र में विश्वसनीयता पैदा कर स्वयं के बल पर आगे बढ़ने की राह कोरोना ने दिखाई है। पूंजी निवेश करने के लिए भारत की तरफ आशा भरी निगाहों से कई अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां देख रही है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कोरोना ने भारत के लिए दिन दूनी रात चौगुने विकास के द्वार खोल दिए है।

21 वीं सदी के भारत के सपने को साकार करने के लिए देश को आत्मनिर्भिर बनाना जरूरी है। आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में वैश्वीकरण का बहिष्कार नहीं किया जाएगा अपितु दुनिया के विकास में मदद की जाएगी। आत्मनिर्भरता, आत्मबल और आत्मविश्वास में मदद की जाएगी। आत्मनिर्भरता, आत्मबल और आत्मविश्वास से ही संभव है। नए भारत के सपनों को आत्मनिर्भर भारत का पंख लगाकर ऊँची उड़ान भर सकते हैं। कोरोना भी हमारे लिए आत्मनिर्भरता का संकेत, संदेश और अवसर लेकर उपस्थित हुआ है। ज़मीन, श्रमिक, तरलता और कानून से जुड़ी बारीकियों पर जोर देते हुए, अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढाँचा, प्रणाली, जीवंत लोकतंत्र और मांग इन पांच स्तंभों को मजबूती देते हुए इन नो शब्दों की सीढ़ियों के सहारे आत्मनिर्भर बनाने में अहम भूमिका निभाने वाले कुटीर, लघु, मध्यम उद्योगों के साथ ही बड़े उद्यमियों, किसानों व श्रमिकों और ईमानदारी से कर अदा करने वाली आम जनता को इस संकट की घड़ी में आत्मनिर्भर बनाने के लिए केंद्र सरकार राहत पैकजों की बौछार लेकर आयी है। देश के विभिन्न संगठित/असंगठित क्षेत्रों के मज़दूरों के लिए भी सरकार की नई घोषणाएं देश में आर्थिक सुधारों के एक क्रांतिकारी दौर की शुरूआत कर चुकी है।

समय आ गया है। लोकल चीजों को लेकर वोकल होने का। अर्थात स्थानीय चीजों के बखान करने का। भारत इस दिनों में अत्याधुनिक तकनीक को अपनाकर, समाज में डिजिटल तकनीक का प्रयोग बढ़ाकर पहले ही अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करने में प्रयासरत् है। वास्तव में भारत का घरेलू बाज़ार निवेशकों के लिए सबसे आकर्षक पेशकशों में से एक है। उद्यामियों को प्रेरित करने की जरूरत है। आत्मनिर्भर भारत अभियान आधुनिक भारत की पहचान बनाने की दिशा में उठाया गया ठोस कदम है। इसी अभियान के अंतर्गत केंद्र द्वारा 20 लाख करोड़ रूपये जो देश की जी.डी.पी. का लगभग 10 प्रतिशत है का राहत पैकेज घोषित किया गया है। इसका उद्देश्य 130 करोड़ भारतवासियों को आत्मनिर्भर बनाना है ताकि देश का हर नागरिक संकट की इस घड़ी में कदम से कदम मिलाकर चल सके। राहत पैकेज से सभी क्षेत्रों की दक्षता बढ़ेगी और गुणवत्ता भी सुनिश्चित होगी। कोरोना

द्वारा आत्मनिर्भरता के सपने को साकार करने का स्वर्णिम अवसर मिला है। इसको संबल चाहिए इरादा, समावेशन, निवेश, आधारभूत अवसंरचना एवं नवोन्मेष का जो भारत सहजता से इस दौर में उपलब्ध करवा सकता है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना के अंतर्गत रेहड़ी/पटरी वालों को सरकार द्वारा रू. 10,000/– का लोन दिया जायेगा। ये अल्पकालिक सहायता छोटे–छोटे विक्रेताओं को अपना काम फिर से शुरू करने में सक्षम बनायेंगे। यहीं आत्मनिर्भर भारत अभियान को गति देगा। उसी प्रकार गांव के पास ही लोकल एग्रो प्रोडक्ट्स के क्लस्टर्स के लिए जरूरी अवसंरचना तैयार की जा रही है। एम.एस.एम.ई. के तहत 16 घोषणाएं की गई। एम.एस.एम.ई. 12 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार उपलब्ध कराता है तथा यह देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। हमें वृद्धिशील परिवर्तन की जगह बड़ी उछाल पर आधारित अर्थव्यवस्था की नींव रखनी होगी। अवसरंचना को आधुनिक भारत के साँचे में ढालना होगा। प्रौद्योगिक संचालित प्रणाली को अपनाकर, गतिशील जनसांख्यिकी को ऊर्जा का स्रोत बनाकर, मांग और आपूर्ति श्रंखला की पूरी क्षमता का उपयोग आत्मनिर्भरता के लिए करना होगा। हम सरल और स्पष्ट कानून, समर्थ और संकल्पित मानवधिकार, नए व्यवसाय एवं निवेश को प्रेरित करने का जोश जो जन–जन में संचरित है के द्वारा यह सरलता से कर सकते हैं। भारत कैपीटल, गुड्स मशीनरी, फार्मा, सेलफोन, इलेक्ट्रॉनिक्स, न्यूलरी टेक्सटाइल और एयर कंडीशनर क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता पर बल दे रहा है।

दुनिया में अगर आगे बढ़ना है तो अपनी इंडस्ट्री को मुकाबले में खड़े होने लायक बनाना होगा न कि ड्यूटी की बैसाखी लगाकर किसी तरह खड़े रखना। अगर आप एक रास्ता बंद करेंगे तो जुगाड़ से लोग दूसरा दरवाजा खोल लेंगे। आत्मनिर्भर भारत बनाने की कोशिश के मद्देनजर ये आशंका बढ़ रही है। कि कहीं फिर तस्करी का धंधा तेज़ तो नहीं हो जाएगा। लेकिन पैनी नज़र से निगरानी रख इसका समाधान हो सकता है। भारत चुनौती को स्वीकार कर ग्लोबल सप्लाई चेन में बड़ी भूमिका निभाने के लिए तैयार है। साधन, सामर्थ्य की बैसाखियों से नैय्या पार लगायेंगे। आत्मनिर्भर भारत के लिए रिफार्म की प्रतिबद्धता के साथ भारत को आगे बढ़ना अनिवार्य है। हमें समता मूलक समाज और अर्थव्यवस्था की स्थापना करनी होगी। कोराना ने लोकल उत्पादन और लोकल बाज़ार का महत्व समझा दिया है। लोकल सिर्फ जरूरत नहीं बल्कि हम सबकी जिम्मेदारी है। लोकल ही जीवन मंत्र है। आत्मनिर्भरता हमें सुख, संतोष देने के साथ सशक्त करता है। जब आचार–विचार, कर्मठता की पराकाष्ठा को कर्तव्यभाव से सराबोर हो, कौशल की पूंजी हो और कोनोरा द्वारा प्रदत्त अप्रतीम अवसर हो तो आत्मनिर्भर भारत बनने से कौन रोक सकता है। कोरोना ने देश के विभिन्न वर्गों को एक साथ जोड़कर देश की विकास यात्रा को एक नया आयाम दिया है। कहते है ना – समय इंसान को सफल नहीं बनाता बल्कि समय का सहीं इस्तेमाल इंसान को सफल बनाता है। शायद ये पंक्तियां इस सत्य को उजागर करती है कि भारत कोरोना काल का सटीक प्रयोग कर, आत्मनिर्भरता की सीढ़ी के सहारे देश का उज्जवल भविष्य सुनिश्चित करेगा। जहां हर भारतवासी फिर से गुनगुना उठेगा– जहां डाल–डाल पर सोने की चिड़िया करती है बसेरा वो भारत देश है मेरा। अतः यह कहना अतिशियोक्ति नहीं होगी कि कोरोना आत्मनिर्भर भारत के लिए अभिशाप नहीं अपितु वरदान है।

**प्रमोद राजेन्द्रन नाइडू**
छात्र (परिवहन योजना एवं रसद प्रबंधन विभाग)

"ब्रह्माण्ड की सारी शक्तियाँ पहले से हमारी हैं, वो हम ही हैं जो अपनी आँखों में हाथ रख लेते हैं और कहते है कि कितना अंधकार है"
स्वामी विवेकानंद

## बादलों में वायरस (एक बाल कल्पना)

गूगल मीट पर सभा लगी हुई थी। सदस्य थे, नन्हे मुन्हे, थोड़े कम टिम–टिम करते सितारे। थोड़े कर टिमटिमाते इसलिए क्युकि सबके मुँह पर लगा हुआ था मास्क। मास्क बहुत सुन्दर था पर सितारों की चमक कम ही कर रहा था। सभा का विषय था कि कैसे इस वायरस (कोविड 19) को बादलों से भगाया जाए ?

हमे सुरक्षा मंत्री चंदा मामा के पास जाना चाहिए हमारे सवालों का जबाब उनके पास जरुर होगा, इन्द्रधनुष के रंगों वाला मास्क पहने एक सितारे ने सलाह दी। चंदा मामा को उस ऑनलाइन सभा में जोड़ा गया। मास्क के सटीक नाप को लेकर चंदा मामा पहले से ही परेशान थे, कभी बिलकुल छोटा मास्क तो कभी एकदम बड़ा। कितने मास्क बनवाए और कब कौनसा मास्क लगाये? चंदा मामा खुद ही नहीं समझ पा रहे थे। खैर चंदा जैसे ही ऑनलाइन दिखे, सभी सितारों ने उन पर सवालों की बारिश कर दी। चंदा ने भी झुंझलाकर जबाब दिया "मैं कोशिश कर तो रहा हूँ न"। चंदा मामा ने धीरे से परी रानी को भी सभा में जोड़ लिया। हमे कब तक ऐसे ही खिड़कियो से झांकना होगा? हम कब खुले आसमान के नीचे, बिना मास्क के खेल कूद पाएंगे? परी रानी अपनी जादूई छड़ी को सेनेटाइज करती हुई सारे सवाल सुन रही थी। क्या तुम जानते हो ये सब क्यों हो रहा है? अब सवाल करने की बारी थी परी रानी की । कोविड वायरस नाम का राक्षस हमारे बादलों में घुस आया है और हमारे पास इस राक्षस को मारने का कोई अचूक हथियार भी नहीं है । पर हमारी कुछ सावधानियां हमे इस राक्षस से बचा सकती है। जैसे एक जगह भीड़ इक्कठा न करे, घर से बाहर मास्क लगा कर निकले, समय–समय पर हांथो को अच्छे से धोये और सबसे महत्वपूर्ण है स्वच्छता बनाये रखें। हमारे सुपर हीरो डॉक्टर एवं वैज्ञानिक अपनी पूरी लगन और मेहनत के साथ इस राक्षस को मरने के लिए हथियार बना रहे है पर जब तक हथियार नहीं बन जाता हम सभी को इन सावधानियों से कोविड वायरस राक्षस के साथ युद्ध करना है।सितारों को समझ आ गया था की अब उनको क्या करना है। सभा के समाप्त होते ही चंदा मामा ने बताया कि ऑनलाइन शॉपिंग साईट पर बार्बी पैटर्न के मास्क की सेल लगी है। सभी सितारे जल्दी–जल्दी गूगल मीट ऑफ करके ऑनलाइन मास्क की खरीददारी में लग गए।

## माँ या महामारी

वो माँ जा चुकी थी, और ये माँ देखना चाहती थी एक बार, एक आखरी बार अपनी उस माँ को, जो जा चुकी थी इस दुनिया से । उस माँ का पार्थिव देह इंतजार कर रहा था इन तीन, दूर शहर में बैठी माओं का, जिनको उस माँ ने जन्म दिया था।पर ये महामारी। इस महामारी (कोविड 19) के संकट में अपने नन्हे से बच्चे को इतने लम्बे सफर पर कैसे लेकर जा सकती है ये माँ। पर इतने लम्बे समय के लिए उसको छोड़ कर भी तो नहीं जा सकती । एक माँ अपनी माँ को एक आखरी बार देखना चाहती थी, लेकिन माँ होने का कर्तव्य भी समझ रही थी। वो माँ तो जीवन पर विजय पा चुकी थी पर ये माँ इस महामारी के सामने खुद को कमजोर महसूस कर रही थी।पर माँ तो कभी कमजोर नहीं होती। आखिरकार तीनो माएं निकल पड़ी अपनी माँ के अंतिम दर्शन को। परन्तु माँ और महामारी की उधेड़बुन में बहुत देर हो चुकी थी। वो माँ तो जा चुकी थी, हमेशा के लिए। एक तरफ ये तीनो माएं उस घर में अपनी माँ की यादों का स्पर्श अनुभव कर रही थी वही दूसरी ओर उनको ख़याल सता रहा था अपने बच्चे का जिसे वो घर पर छोड़ कर आई थी। माँ हमेशा ही प्रबल और मजबूत किरदार का एक उदाहरण रही हैपरन्तु इस महामारी ने एक माँ को भी कमजोर महसूस करने पर मजबूर कर दिया था।

**स्वाति बिलैया,** कार्यालय सहायक

# विश्व पटल पर मुखरित होती हिंदी

माँ का सम्बोधन यदि हृदय के उद्‌गार से शब्दस्वरूप में सबसे मीठा लगता है तो उसकी पृष्ठभूमि में हिन्दी भाषा ही है, क्योंकि हिन्दी महज भाषा ही नहीं भाव, विचार और कल्पनाओं की सहज अनुभूति है। हिन्दी मीठे जल का वह सागर है जिसमे अनकोंनेक भाषा एवं बोलियों की नदियाँ समाहित है। हिन्दी अनेकता में एकता की अक्षरशः साक्षी है। तभी तो इतने कम समयावधि में विश्व की सबसे गतिशील भाषा है। हिन्दी को महज भाषा समझना एक भूल ही है, यह सर्वांगीण संस्कृति से सुशोभित प्रत्येक व्यक्ति का अन्तरभाव है तभी तो संसार के समस्त भाषाओं के प्रकाट्‌य में इसके स्वर अनुगूंजित होते हैं। व्यंजना के प्रविष्ट होते ही यह हिन्द का प्रतीक बन हिन्दी बन अवतरित हो जाती है।

भाषा की बुनियादी संस्कृत से वैदिक एवं लौकिक संस्कृत की द्विधारा से पाली और प्राकृत भाषा के प्रकाट्‌य के पश्चात खड़ी भाषा का स्वरूप प्रकट हुआ। ब्रज और अवध की बोली ने भक्तिकाल को प्रकाशित किया। भारतेन्दु ने खड़ी बोली को परिष्कृत हिन्दी का स्वरूप दिया। महावीर प्रसाद द्विवेदी और राष्ट्र कवि मैथिलीशरण गुप्त जैसे व्यक्तित्व ने हिन्दी को अभिव्यक्त किया। छाया वादी कवियों ने हिन्दी में रस प्रवाहित कर दिया। गद्य शिरोमणि मुंशी प्रेमचंद जैसे अमर कृतिकारों ने इसे जन–जन के भाव और विचार में समाहित कर दिया और शरद बाबू जैसे उपन्यासकारों ने आम जनजीवन की कल्पनाओं को यथार्थ में अभिव्यक्त कर दिया तब सर्वभौम मान्यता लिये हिन्दी 'माँ' की भाषा के रूप में पूजित होने लगी। महात्मा गांधी ने सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा की, देशाटन के बाद इन्दौर में सन् 1918 में आयोजित राष्ट्रीय साहित्य परिषद के सम्मेलन में उन्होंने यह घोषणा की कि हिन्दी ही राष्ट्र की भाषा है। आज का दौर नया है जहाँ सृजन विकास को प्राथमिकता प्राप्त है। अतीत के पूर्वाग्रह से नयी पीढ़ी मुक्त हो चली है। हिन्दी पर चर्चा अब राजनीति नहीं अपितु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय चिन्तन का विषय बन चुकी है। विश्व अब बड़े बाजार और व्यापार के स्वरूप में हिन्दी को आधारभूत उपयोगिता के साथ स्वीकार कर चुका है। हिन्दी अब विश्व में तीसरे स्थान की भाषा न रह के पहले स्थान की उपयोगिता की श्रेणी में है। यह सही समय है जब हम इसे राजभाषा के स्वरूप से मुक्त कर राष्ट्रभाषा के स्थान पर सुशोभित करें।

हिन्दी के चिन्तन का अर्थ किसी अन्य भाषा के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण नही है इसका आशय केवल राष्ट्र–सम्मान की अभिवृद्धि हैं। कम्प्यूटर, मोबाइल, फेसबुक, ब्लाग इत्यादि समस्त आधुनिक संचार माध्यम इस भाषा के भावरस से भीगे हुए हैं। इसके बिना ये सब नमक या शक्कर के भोजन, व्यंजन की तरह है। इसे आप फिर से स्मरण में रखना चाहें कि हिन्दी महज भाषा नहीं बल्कि आपके भाव, विचार और कल्पनाओं की सहज अभिव्यक्ति है तभी तो "बहुत सारी अल्मारियो में रखी बुकें पढ़ कर भी आप कंफ्यूजनात्मक स्थिति में नहीं रहते" संसार की यही वह अनूठी भाषा है जिसके शब्दों को भाव रस में भीगो कर ऐसा परोसा कि स्वरूप का भेद तिरोहित होकर सहज अर्थ का व्यजन बोलने, सुनने और समझने वाले को तृप्त कर गया।शिकागो की यात्रा में स्वामी विवेकानंद जा रहे थे उनकी बगल के स्थान पर एक अंग्रेज महाशय विद्यमान थे, विवेकानंद के तेजोमय व्यक्तित्व ने उनका ध्यान आकर्षित किया उन्होंने उनसे पूछा–व्हाट ईज योर नेम? स्वामी विवेकानंद जी ने सहजभाव से हिन्दी में उत्तर दिया मेरा नाम विवेकानंद है। उन अंग्रेज महाशय को लगा कि इन्हें अंग्रेजी बोलने में कठिनाई है तो उन्होंने टूटी–फूटी हिन्दी में अगला प्रश्न किया तुम कहाँ जाते हो? अब स्वामी जीने अंग्रेजी में उत्तर दिया– आई एम गोइन्ग टू शिकागो। वो

महाशय खीझ पड़े कहने लगे कि ये क्या बात हुई जब मैं अंग्रेजी बोलता हूँ तब आप हिन्दी में कहते हो और जब मैं हिन्दी में बोला रहा हूँ तो तुम अंग्रेजी में बोल रहे हो। स्वामी विवेकानंद जी ने सहज मुस्कान के साथ कहा कि जब तुम अपनी माँ का सम्मान कर रहे थे, तब मैं अपनी माँ का मान बढ़ा रहा था और जब आपने मेरी माँ का सम्मान किया तो मैं आपकी माँ का मान बढ़ाने लगा। भाषा मातृत्व का सम्मान है। भाषा राष्ट्र की पहचान है, भाषा के बिना उस राष्ट्र के नागरिक की आत्मा अधूरी है। आज जरूरत इस बात की है कि हम सीमित विचारों के दायरे से ऊपर उठकर अपने समग्र स्वरूप के निर्माण के लिये राष्ट्रहित सर्वोपरि की बुनियाद पर ये संकल्प लें कि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा के स्वरूप में संविधान में समाहित हो, क्योंकि अनेकता में एकता की विशेषता लिये हिन्दी ही भारत को अखण्ड, अभेद और अजेय के स्वरूप में प्रतिष्ठित करेगी।

आज विश्व क्षितिज पर हिन्दी ध्रुवतारे की तरह चमक रही है। हिन्दी के महत्व को विश्व ने शिरोधार्य किया है। अब हमारे प्रधानमंत्री ही नहीं विश्व के राष्ट्रध्यक्षों ने अपने सम्भाषणों और विचार गोष्ठी में हिन्दी को अनुगूंजित किया है यह सही समय है, आइये राष्ट्र में ही नहीं विश्व में हिन्दी को सुपूजित करने मानसिक क्रांति का शंखनाद करें, क्योंकि हिन्दी भारत माता के माथे की बिन्दी है जिस के चमक से माँ का अलौकिक स्वरूप भी तेजोमय है।

**सावंत गोस्वामी**, सहायक प्राध्यापक

## एस.पी.ए. भोपाल में उन्नत भारत अभियान

उन्नत भारत अभियान, उच्च शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इस अभियान की दृष्टि में एक समावेशी भारत की वास्तुकला के निर्माण में मदद करने के लिए ज्ञान संस्थानों का लाभ उठाकर ग्रामीण विकास प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाना है। योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल उन्नत भारत अभियान के प्रतिभागी संस्थानों में से एक है।

उन्नत भारत अभियान में भाग लेने वाले संस्थानों की मुख्य जिम्मेदारी चयनित ग्रामीण समूहों के साथ संबंध विकसित करना, योजना प्रक्रिया में शामिल करना और उन समूहों में विकासात्मक प्रयासों को सुधारने और तेजी लाने के लिए अपेक्षित विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। एस.पी.ए. भोपाल ने भोपाल जिले के बैरसिया तहसील में छः गांवों भेसोदा, सेमरा कला, समुआ, लंगूरपुर और बिनेका को अपनाया है। ये गांव भोपाल शहर के उत्तर में बेरसिया तहसील में संस्थान परिसर से लगभग 75 किलोमीटर दूरी पर हैं। इस अभियान के पहले चरण में गोद लिए गए गांवों की रूपरेखा तैयार

करना है इस संदर्भ में 22 फरवरी 2020 को ग्राम सर्वेक्षण किया गया। इस स्व सेवा में बी. आर्क 6 वे सेमेस्टर के छात्र, बी. प्लान द्वितीय एवं आठवे सेमेस्टर के छात्र, एम. प्लान द्वितीय सेमेस्टर (एम. यू.आर.पी.) के छात्रों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस सर्वेक्षण में संकाय सदस्य डॉ. देवर्षि

चौरसिया, डॉ. अशफाक आलम, डॉ. अमित चटर्जी, श्रीमति सोनल तिवारी, श्री कर्णसेन गुप्ता, श्री विक्रम कोहली, श्रव्य रत्न एवं श्री राजेश सावरकर छात्रों के साथ थे।

छात्रों और संकाय सदस्यों ने गांव का सर्वेक्षण, घरेलू सर्वेक्षण, गांव के सरपंच, सचिव, रोजगार सहायक, किसानों और अन्य बुजुर्गों के साथ बातचीत की। उन्होंने प्राथमिक/माध्यमिक विद्यालयों का दौरा भी किया। और बच्चों के दृष्टिकोण पर एक सिट एण्ड ड्रा प्रतियोगिता आयोजित की। सर्वेक्षण के दौरान निम्नलिखित समस्यायें एवं निष्कर्ष निकाले गए।

1. भैसेड़ा ग्रामः गांव में पेयजल समस्या थी, विद्यालय के इमारत की हालत भी अच्छी नहीं थी और शौचालय की हालत खराब थी, ज्यादातर छात्र निजी स्कूलों में पड़ना पसंद करते थे।
2. सेमरा कला ग्रामः गांव में ग्राम विकास की सरकारी योजनाओं के कार्यान्वयन का अभाव था। आजीविका का कोई विविधिकरण नहीं था। मिट्टी के बर्तनों, टोकरी बनाने जैसी पारम्परिक आजीविका की कमी। उच्च और उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की संख्या बहुत अधिक थी। राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रमों के बारे में पर्याप्त जानकारी का अभाव और रोजगार के लिये युवाओं का पलायन हुआ।
3. लेंगरपुर एवं बिनेका ग्रामः अधिकांश घर कच्चे बने हुए थे और जल निकासी की सुविधा नहीं थी। इनके अलावा पेयजल और शौचालय की समस्यायें थीं। स्वच्छ भारत मिशन के तहत सभी के लिए आवास और शौचालय की सरकारी योजना लगभग गायब थी। ग्रामीणों की एक मात्रआजीविका कृषि थी और आजीविका का कोई विविधिकरण नहीं हुआ था।
4. झिकरियां कला और सिपुआं ग्राम : कृषि के अलावा आजीविका का कोई विकल्प नहीं था। सीमांत खेतीहर मजदूरों के पास वैकल्पिक व्यवसाय नहीं था। उन्हें 4 से 6 महीने काम के लिए अन्य शहरों पलायित होना पड़ता है।

कक्षा पहली से कक्षा चार के छात्रों के मध्य सिट एण्ड ड्रा प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। रेखाचित्र बनाने के बाद, संकाय सदस्यों द्वारा रेखा चित्र की सीटों का मूल्यांकन किया गया। इस प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्र को प्राधानाचार्य एवं कक्षा शिक्षक द्वारा एक कहानी की किताब, शब्द कोश एवं चार्ट से पुरस्कृत किया गया। सभी छात्रों को चाकलेट वितरित की गई।

परियोजना समन्वयक

**डॉ. अशफाक आलम,** सहायक प्राध्यापक

# स्पन्दन

## वार्षिक राजभाषा पत्रिका

अंक 6, सितम्बर 2020

## राजभाषा कार्यान्वयन समिति

**अध्यक्ष**
**प्रो. (डॉ.) एन. श्रीधरन**

**सदस्य**
श्री शाजू वर्गीज, कुलसचिव (प्रभारी)
डॉ. बिनायक चौधुरी, प्राध्यापक
डॉ क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
श्री गौरव सिंह, सहायक प्राध्यापक
श्री सन्मार्ग मित्रा, सहायक प्राध्यापक
श्री मनीष विनायक झोकरकर, सहायक कुलसचिव
श्री अमित खरे, सहायक कुलसचिव
श्रीमती दीपाली बागची, सहायक कुलसचिव
श्री आनंद किशोर सिंह, अनुभाग अधिकारी
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिन्दी सहायक
छात्र परिषद द्वारा नामित, प्रतिनिधि

**सम्पादक मण्डल**
श्री मुकेश पाठक, उप पुस्तकालयाध्यक्ष
डॉ. क्षमा पुणताम्बेकर, सहायक प्राध्यापक
डॉ. अशफाक आलम, सहायक प्राध्यापक
श्रीमती श्वेता सक्सेना, सहायक प्राध्यापक
श्री सुनील कुमार जायसवाल, हिंदी सहायक

**पत्रिका के मुख एवं अंतिम पृष्ठ का अभिकल्पन**

श्री श्रीनिवास शिन्दे, छात्र (एम.डेस. द्वितीय वर्ष)

SCHOOL OF PLANNING AND ARCHITECTURE, BHOPAL

स्थपतिः स्थापनार्हः स्यात् सर्वशास्त्रविशारदः

योजना एवं वास्तुकला विद्यालय भोपाल, मध्य भारत में झीलों के शहर भोपाल में स्थित है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की पृष्ठभूमि में उपरोक्त चित्र में दर्शायी गयी मालवा वास्तुकला की एक अप्रितम रचना समाहित है, जो कि मालवा शासन की राजधानी मांडू में स्थित नीलकंठ महादेव मंदिर के सामने 'महादेव' के प्रतीक में बनी एक सुन्दर शंखनुमा घुमावदार जलवाहिका है। इस जलवाहिका में आरम्भ में भक्तजन पुष्प को पूर्ण आस्था के साथ अपनी इच्छापूर्ति हेतु अर्पित करता है। जलवाहिका में प्रवाहित हो रहा जल, पुष्परूपी इच्छा के साथ जीवन के संघर्ष एवं ध्येय की सफलता का संकेत देता है, जो कि वास्तुकला का एक अभिन्न अंग और योजना एवं वास्तुकला विद्यालय के स्वरूप का प्रतीक है। संस्थान के प्रतीक चिन्ह की इसी पृष्ठभूमि पर बना शंखाकार रूप मे दर्शित 'S' अग्नि, 'P' वायुतरंग एवं 'A' पानी की बूंद को प्रदर्शित करती है। प्रतीक चिन्ह के अंतर्गत संस्कृत में लिखा श्लोक "स्थपतिः स्थापनाः स्यात् सर्वशास्त्रविशारदः" समरांगण सूत्रधार से उद्धृत है जिसका अर्थ है कि वास्तुकार को वास्तुकला के साथ सभी विषयों का ज्ञाता होना चाहिये। इस प्रकार से संस्थान के इस प्रतीक चिन्ह का उद्देश्य छात्रों को वास्तुकला के साथ-साथ सभी विषयों में पारंगत कर भविष्य के नए आयामों हेतु तैयार करना है।

# योजना एवं वास्तुकला विद्यालय, भोपाल

(राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
नीलबड़ रोड, भौरी, भोपाल (म. प्र.) - 462030
Website: www.spabhopal.ac.in